वर्ष 2021-22

शिवा

महाविद्यालय पत्रिका

शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय

सम्बद्ध : सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर

परमपूज्य स्व. राजा शिवपति सिंह जी

संस्थापक

शैक्षिक क्रान्ति के कुशल प्रणेता, हे युग दृष्टा तुम्हें नमन।
शिवपति सिंह शोहरत के लाल, हे ज्ञान प्रकाशक तुम्हें नमन।

शिखा

वर्ष 2021-22

सम्पादक मण्डल

मुख्य-सम्पादक

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह

सह-सम्पादक

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह
कैप्टन मुकेश कुमार
डॉ. राम किशोर सिंह

संरक्षक

श्री राजा योगेन्द्र प्रताप सिंह
प्रबन्धक

प्रो. अरविन्द कुमार सिंह
प्राचार्य

शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय

सम्बद्ध : सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर

शिवा

महाविद्यालयी पत्रिका
शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय
शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर (उ.प्र.)

सत्र : 2021-22

ISBN : 978-81-955075-1-1

प्रतियाँ - 1000

प्रकाशक :
कमल प्रकाशन
पक्कीबाग, दुर्गाबाड़ी रोड, गोरखपुर

मुख्य सम्पादक
डॉ. धर्मेन्द्र सिंह

संरक्षक
श्री राजा योगेन्द्र प्रताप सिंह (प्रबंधक)
प्रो. अरविन्द कुमार सिंह (प्राचार्य)
शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय
शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर (उ.प्र.)

पत्रिका का सर्वाधिकार - महाविद्यालय के पास संरक्षित
- रचनाओं का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों, रचनाकारों और संकलनकर्ताओं का

मुद्रक :
कमल आफसेट प्रिन्टर्स
दुर्गाबाड़ी, गोरखपुर
मो. 9451462653

राजा योगेन्द्र प्रताप सिंह

प्रबन्धक

प्रो. अरविन्द कुमार सिंह

प्राचार्य

प्राचार्य की कलम से ..

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में 'मनुष्य की अन्तर्निर्मित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है, शिक्षा से ही हमें ज्ञान और विद्या की प्राप्ति होती है। शिक्षा से ही समग्रता की प्राप्ति होती है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति तथा विकास उस राज्य के नागरिकों की शिक्षा के प्रति जागरूकता पर निर्भर करता है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष शिक्षा और उसके महत्व के प्रति जागरूक रहा है तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार निमित्त गुरूकुल की स्थापना की। आधुनिक काल में यही गुरूकुल विद्यालय-महाविद्यालय-विश्वविद्यालय कहे गये।

भारतीय शिक्षा सत्य, सहिष्णुता, अहिंसा के आदर्शों पर पुष्पित-पल्लिव होती रही है। हिमालय के तराई क्षेत्र में अशिक्षा, अज्ञानता का अंधकार व्याप्त था। इस अंधकार की व्याप्ति को शोहरतगुढ़ राजघराने के अनमोल रत्न 'राजा शिवपति सिंह जी' ने 'शिवपति महाविद्यालय' के रूप में एक अनमोल रत्न इस समाज को दिया। यह शिक्षण संस्थान अपने स्थापना वर्ष से ही गुणवत्ता परक शिक्षा, अनुशासन तथा कर्त्तव्यनिष्ठा के लिए जाना जाता रहा है और राष्ट्र के लिए आदर्श नागरिक बनाने में अपना अमूल्य योगदान देता रहा है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में ज्ञान का स्थानान्तरण शिक्षा से ही सम्भव है। शिक्षा व्यक्ति को, समाज को, जोड़कर संस्कृति का परिरक्षण करती है तथा आधाभूत नियमों, कलस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों का बोध कराती है। अन्तर्निहित क्षमता एवं व्यक्तित्व के निर्माण विकास में शिक्षा की भूमिका सर्वोपरि है।

किसी शैक्षिक संस्थान की पत्रिका का प्रकाशन केवल परम्पराओं का अनुपालन नहीं होता अपितु संस्थान के चरित्र का प्रकाशन होता है। इसमें संस्थान के शैक्षिक स्वरूप एवं क्षमताओं का प्रतिविंबन होता है और प्रतिवर्ष होने वाले परिवर्तन, विकास और उपलब्धियों का प्रतिवेदन होता है। संस्थान की पत्रिका का प्रकाशन का सम्बंध कक्षाओं के पाठ्यक्रमों से नहीं होता है। महाविद्यालयी

पत्रिका साहित्यिक क्षमताओं के सृजन की अभिव्यक्ति है, वैज्ञानिक लेखनी की अभिव्यक्ति है।

शिवा महाविद्यालय पत्रिका में प्रकाशन निमित्त छात्र/छात्राओं द्वारा अपनी मौलिक रचनाओं, मौलिक अभिव्यक्ति, संकलन आदि को अपेक्षा से प्रेषित किया है परन्तु बड़ी संख्या में प्राप्त रचनाओं का मुद्रण और प्रकाशन स्थान के सीमित होने के कारण सम्भव नहीं है।

सम्पादक मण्डल अनेकानेक मापदण्डों का अनुपालन करते हुए सर्वश्रेष्ठ रचनाओं/संकलनों का प्रकाशन किया है जिन छात्र/छात्राओं की रचनाएं कतिपय कारणों से इस पत्रिका में प्रकाशित नहीं हो सकी उनसे मेरा आग्रह है कि हतोत्साहित न हों और अपनी लेखनी को परिमार्जित कहें, प्रयत्नशील रहें, सफलता अवश्य आपका वरण करेगी।

किसी भी पत्रिका का प्रकाशन समवेत सहयोग से ही पूर्णता प्राप्त करता है। संपदक मण्डल का हृदय से आभारी और कृतज्ञ हूँ। पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी रहे समस्त शिक्षणेत्तर बंधुओं को भी मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। पत्रिका के प्रकाशन में मुद्रण संबंधी त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थना के साथ, शिवा का वर्तमान अंक विद्वान पाठकों के कर कमलों में अर्पित करता हूँ और विश्वास है कि आप इसका नीर-क्षीर विवेक से मूल्यांकन करेंगे।

सधन्यवाद !

प्रो. अरविन्द कुमार सिंह
प्राचार्य

"उठो, जागो और तब तक मत रूको,
जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाये।"

- स्वामी विवेकानन्द

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	लेखक/संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
1.	प्राचार्य की कलम से	डॉ. अरविन्द कुमार सिंह	
2.	सन्देश	आनंदीबेन पटेल	5
3.	शुभकामना सन्देश	प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव	6
4.	सन्देश	जगदम्बिका पाल	7
5.	शुभकामना सन्देश	संजीव रंजन	8
6.	शुभकामना संदेश	अवधेश नारायण मौर्य	9
7.	सम्पादकीय	डा. धर्मेन्द्र सिंह	10
8.	शोहरतगढ़ संक्षिप्त परिचय	पंकज सिंह	11
9.	महाविद्यालय का संक्षिप्त इतिहास	धर्मेन्द्र सिंह	12
10.	प्राचार्य अनुक्रम		13
11.	महाविद्यालय परिवार		14
12.	संकाय	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	16
13.	प्रयोगशाला	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	16
14.	सेमिनार	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	17
15.	नैक (NAAC)	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	18
16.	छात्रावास एवं पुस्तकालय		20
17.	N.S.S./N.C.C.		21
18.	इतिहास में गुम बलिदान की गाथाएं	डॉ. अरविन्द कुमार सिंह	21
19.	सुरक्षित यातायात	डॉ. धर्मेनद्र सिंह	23
20.	Role of Science in Environment Culture	कैप्टन मुकेश कुमार	24
21.	वायु प्रदूषकों के प्रभाव	विनोद कुमार सिंह	26
22.	पिपरहवा : बौद्ध विरासत	डॉ. ज्योति सिंह	28
23.	उच्च शक्ति लेजर का उपयोग विध्वनाशक हथियार के रूप में	डॉ. रामकिशो सिंह	30
24.	प्यारे पापा	रोशनी सिंह	31

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	लेखक/संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
25.	तरक्की का विकल्प	सृष्टि पाण्डेय	31
26.	कविता	श्रेया पाण्डेय	32
27.	दुनिया में अनमोल माँ	उर्मिला गुप्ता	32
28.	आभार	कु. अर्चना श्रीवास्तव	33
29.	तुलसीपुर (देवी पाटन)	कु. अर्चना श्रीवास्तव	33
30.	आत्म विजय	राहुल यादव	34
31.	देश हमें देता है सब कुछ	रोली गुप्ता	34
32.	तेरी गोदी में जो सुख माँ	रोली गुप्ता	35
33.	कैम्प के यादें	दिव्य मद्धेशिया	35
34.	बेटियाँ	प्रियंका गौड़	35
35.	मुझको सरहद पर जाना है	दिव्या मद्धेशिया	36
36.	जीवन की भेंट चढ़ा देंगे	श्वेता	36
37.	दीपावली पर क्यों न आए पापा अबकी बार	शालिनी चौधरी	37
38.	पिता	शालिनी चौधरी	38

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर द्वारा वार्षिक पत्रिका **'शिवा'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के माध्यम से जहाँ विद्यार्थियों को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है, तो वहीं उनकी साहित्यिक अभिरूचि का भी पता चलता है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय की पत्रिका में ऐसे महत्वपूर्ण विषयों एवं पाठ्य सामग्री का समावेश किया जायेगा, जो विद्यार्थियों के लिये उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक होगी।

पत्रिका **'शिवा'** के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

यह सन्देश पत्रिका के पिछले संस्करण के लिए प्राप्त हुआ था।

प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव
कुलपति

Prof. Hari Bahadur Srivastava
Vice-Chancellor

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय
कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर-272202, उ.प्र. (भारत)

SIDDHARTH UNIVERSITY
Kapilvastu, Siddharthnagar-272202 (U.P.) India

पत्रांक : 753/कुलपति/2022
दिनांक: 15/09/2022

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश अपनी वार्षिक पत्रिका **'शिवा'** का प्रकाशन करने जा रहा है।

किसी भी उच्च शिक्षा संस्था की वार्षिक पत्रिका वास्तव में संस्था की शिक्षण, शोध–प्रवृत्ति व सांस्कृतिक चेतना के साथ–साथ अन्य रचनात्मक गतिविधियों के स्वरूप और वातावरण का प्रतिदर्श होती है। मेरी शुभकामना है कि **'शिवा'** पत्रिका महाविद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों की रचनात्मकता का सुगम अभ्यास–मार्ग बनती रहे तथा महाविद्यालय की प्रतिभाओं का सुंदर व सशक्त मंच के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हो सके।

पुनश्च बहुत, बहुत शुभकामनाएँ।

(प्रो0 एच0 बी0 श्रीवास्तव)

जगदम्बिका पाल
सांसद (लोकसभा सदस्य)
पूर्व मुख्यमंत्री उ०प्र०

सत्यमेव जयते

निवास :........
12, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली
11 अशोक मार्ग, लखनऊ
साड़ी चौराहा (पावन हाउस के सामने)
सिद्धार्थनगर
मो.नं. 09013180217, 9415037381

दिनांक 12.07.2021
पत्रांक सं. 0002007

सन्देश

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश श्री डॉ० अरविन्द कुमार सिंह जी (प्राचार्य) द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका ''**शिवा**'' का प्रकाशन किया जा रहा है। शिक्षण संस्थानों का दायित्व है कि वे निर्धारित पाठ्यक्रमों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्यों द्वारा संस्कारित करें, जिससे वह देश प्रेम, अनुशासन, सद्भाव, सेवा, त्याग आदि गुणों से परिपूर्ण नागरिक बन सकें। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में छात्र/छात्राओं के शारीरिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास से संबंधित पठनीय सामग्री एवं महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं तथा शिक्षको के रचनात्मक उपलब्धियों का समावेश होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

(जमदम्बिका पाल)

यह सन्देश पत्रिका के पिछले संस्करण के लिए प्राप्त हुआ था।

संजीव रंजन
आई.ए.एस.

जिलाधिकारी, सिद्धार्थनगर
055444-222169 (O)
222333 (R), 220174 (Fax)
9454417530 (CUG)
Email : dmsid@up.nic.in
अ0शा0पत्रसं0 ..../st/2022

शुभकामना संदेश

.

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि जनपद के शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शोहरतगढ, सिद्धार्थनगर अपनी वार्षिक पत्रिका शिवा का प्रकाशन कर रहा है। महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका छात्र/छात्राओं एवं शिक्षकों के सृजनात्मक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करेगी। पत्रिका के माध्यम से लेखन एवं अभिव्यक्ति का विकास होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में छात्र/छात्राओं एवं शिक्षकों के बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं रचनात्मक उपलब्धियों का समावेश होगा ।

अतः मै शिवा पत्रिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामना करता हूँ।

(संजीव रंजन)
जिलाधिकारी,
सिद्धार्थनगर।

अवधेश नरायन मौर्य
जिला विद्यालय निरीक्षक
सिद्धार्थनगर।

शुभकामना संदेश

.

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर द्वारा गत वर्ष की भाँति वर्ष 2022–23 में भी अपनी वार्षिक पत्रिका ''शिवा'' का प्रकाशन कर रहा है। महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका छात्र/छात्राओं व शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के सृजनात्मक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करेंगी। पत्रिका के माध्यम से लेखन एवं अभिव्यक्ति का विकास होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में छात्र/छात्राओं व शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के बौद्विक आध्यत्मिक एवं रचनात्मक उपलब्धियो का समावेश होगा।

अतः मै "शिवा" पत्रिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

(अवधेश नारायण मौर्य)

सम्पादकीय

अपनी बात.....

किसी भी संस्थान की पत्रिका का प्रकाशन उस संस्थान के चरित्र का प्रकाशन होता है। यह पत्रिका वर्ष-प्रतिवर्ष होने वाले परिवर्तन, विकास, उपलब्धियों का दर्पण होता है। कोई भी पत्रिका सामान्यतः पाठ्यक्रमों से भिन्न तथा उस शैक्षणिक संस्थान की साहित्यिक सर्जन की अभिव्यक्ति होती है। शैक्षणिक संस्थान की पत्रिका, पाठ्यक्रमों से भिन्न होते हुए भी छात्र/छात्राओं में अन्तर्निहित क्षमता तथा व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

''**सा विद्या या विमुक्तये**'' अर्थात शिक्षा वही है जो मुक्ति दिलाती है- अंधकार से, अज्ञान से, अकर्मण्यता से। शिक्षा का उद्देश्य, संस्कारवान, स्वास्थ्य, श्रमनिष्ठ, संस्कृतिनिष्ठ, साहसी, कुशल एवं देशप्रेम युक्त राष्ट्रप्रेम की प्रबलता युक्त नागरिक का निर्माण जिससे स्वाधीन आत्मनिर्भर राष्ट्र निर्माण को परिलक्षित कर सके।

मेरे लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि मुख्य सम्पादक का दायित्व मुझे प्राप्त हुआ। मेरी पूरी कोशिश है कि मैं अपने दायित्वों का सफल निर्वहन कर सकूँ।

महाविद्यालय के छात्र/छात्राएं, शिक्षणेत्तर बंधु तथा शिक्षक बंधु अपनी रचनाओं से पत्रिका को अलंकृत किया है। जो रचनाएं प्रकाशित नहीं हो पा रही हैं उनके रचनाकारों से विनम्र निवेदन है कि इस 'अस्वीकार' में से 'स्वीकर' की मीमांसा करें एवं पूर्ण मनोयोग से अपनी रचनाओं को परिष्कृत करें, अभीष्ट अवश्य प्राप्त होगा।

मैं, प्राचार्य प्रो. अरविन्द कुमार सिंह को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा जिनकी स्वप्नदर्शिता एवं दूरदर्शिता, कर्मठता, अटूट कागज ने महाविद्यालय के शैक्षिक उन्नयन, अनुशासन को नई दिशा एवं ऊचाई पदान की।

पत्रिका का प्रकाशन सामूहिक प्रयास से ही सम्भव हो सका। समवेत सहयोग से ही पूर्णता की सिद्धि प्राप्त होती है मैं सम्पादक मण्डल के सदस्यों का आभारी रहूँगा जिसके सहयोग के बिना पत्रिका की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सभी के ज्ञान और सहयोग से ही पत्रिका परिमार्जित, परिष्कृत होकर आपके सम्मुख हैं पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ तथा पत्रिका के अनुशीलन हेतु नीर-क्षीर-विवेकी पाठकों को अर्पित करता हूँ।

सधन्यवाद !

डा. धर्मेन्द्र सिंह

मुख्य सम्पादक

शोहरतगढ़ : संक्षिप्त परिचय

प्राचीन शाक्य गणराज्य तथा कालान्तर में बस्ती जनपद के उत्तरी भू-भाग के रूप में चाँदापार (वर्तमान - शोहरतगढ़) गरीबी एवम् अशिक्षा का केन्द्र बन गया था परन्तु राजा शिवपति सिंह जी के उत्थान पश्चात् चाँदापार विकास तथा प्रगति के रास्ते पर चल पड़ा।

प्राचीन चाँदापार प्रगति के चतुर्मुखी रथ पर बैठकर शोहरतगढ़ के रूप में कायान्तरित हो चुका है। शोहरतगढ़ की भोगौलिक स्थिति 27° 23'34"N तथा 82°57'24"E और समुद्रतल से 92 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

रेलमार्ग से शोहरतगढ़ गोरखपुर से पश्चिम में 91 किमी की दूरी पर तथा गोण्डा से 131 किमी उत्तर पूर्व स्थित है।

29 दिसम्बर 1988 से पूर्व शोहरतगढ़ (प्राचीन - चाँदापार) बस्ती जनपद का अभिन्न भू-भाग था पर उ0 प्र0 राज्य के 75 वें जनपद- सिद्धार्थनगर के गठन के साथ ही यह सिद्धार्थनगर जनपद में समाहित हो गया और इसे जनपद सिद्धार्थनगर की पाँच तहसीलों में सबसे बड़ा तहसील होने का गौरव भी मिला।

राष्ट्रीय राजमार्ग सं.730 शोहरतगढ़ से होकर गुजरती है।

भारत की जनसंख्या - 2011 के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 25,000 से अधिक है जिसमें 52% तथा 48% महिलाओं की जनसंख्या है। यहाँ की साक्षरता लगभग 60% है जो कि राष्ट्रीय गुणांक 59.5% से अधिक है। इसमें पुरुष साक्षरता 67% तथा महिला साक्षरता 51% है।

पंकज सिंह
कार्यालय अधीक्षक

महाविद्यालय
स्थापना का संक्षिप्त इतिहास

महाराजा शिवपति सिंह जी द्वारा स्थापित शिवपति एजूकेशनल ट्रस्ट द्वारा उच्च शिक्षा की महत्ता के दृष्टिगत शिवपति महाविद्यालय (1964) की नींव रखी गई। उच्च शिक्षा के उच्चतम् मानकों की अवधारणा, समाज तथा देश को अनुशासित, कर्तव्यनिष्ठ एवम् ईमानदार नागरिक देना ही इस महाविद्यालय का संकल्प है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1960 की धारा 2 (एफ) एवम् 12 (बी) के अन्तर्गत इस महाविद्यालय को मान्यता प्राप्त हुई तो इसके पावन, पवित्र उद्देश्यों को मानों पंख लग गये। इस महाविद्यालय की स्थापना का मूल उद्देश्य उच्च विचार, आदर्शों तथा सिद्धान्तों एवम् मानवीय मूल्यों के परिमार्जन, परिवर्धन से सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीयता तथा भावना को सुदृढ़ करने के लिए की गयी थी।

महाविद्यालय अपने स्थापना काल से ही श्री विश्वनाथ सिंह जैसे कुशल शिल्पी की कल्पनाओं में गढ़ी गई। महाविद्यालय अपने स्थापना काल से ही उच्च आदर्शों, सद्भावना, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा के लिए दूसरे महाविद्यालयों के लिए एक आदर्श रहा है। श्री विश्वनाथ सिंह को इस महाविद्यालय का प्रथम प्राचार्य होने का गौरव प्राप्त हुआ।

महाविद्यालय के स्थापना वर्ष (1964) में ही अंग्रेजी, संस्कृत, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, एवम् भूगोल, की मान्यता तत्कालीन गोरखपुर विश्वविद्यालय से मिली, तदुपरान्त अगले वर्ष ही हिन्दी, प्राचीन इतिहास एवम् राजनीति शास्त्र की मान्यता प्राप्त हुई। अपने स्थापना काल से ही कला संकाय के आठ विषय महाविद्यालय में हैं तथा विज्ञान वर्ग में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवम् गणित की कक्षाओं की मान्यता वर्ष 1967 सें एवम् प्राणी विज्ञान व वनस्पति विज्ञान की मान्यता वर्ष 1971 में मिली। अपनी गुणवत्ता परक अध्ययन-अध्यापन के कारण महाविद्यालय, विज्ञान संकाय में, विश्वविद्यालय स्तरीय शैक्षिक गुणवत्ता के कारण ख्याति प्राप्त करता रहा है।

शैक्षिक उन्नयन के क्रम में महाविद्यालय में शिक्षण-प्रशिक्षण विभाग की स्थापना वर्ष 1973 में हुई तथा **NCTE** से इसको वर्ष 1985 में मान्यता प्राप्त हुआ। अपनी शैक्षिक विकास यात्रा में महाविद्यालय में वर्ष 2002 में प्राचीन इतिहास एवम् हिन्दी की स्नातकोत्तर कक्षाओं के संचालन की मान्यता मिली। अपनी समृद्धि की प्रगति यात्रा में एक लम्बे अन्तराल पश्चात् यशस्वी, लोकप्रिय, अनुशासननिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ प्राचार्य प्रो. अरविन्द कुमार सिंह के अथक प्रयासों से महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर कला संकाय में शिक्षा शास्त्र और गृह विज्ञान की मान्यता वर्ष 2021 में मिली।

डा. धर्मेन्द्र सिंह
प्राणि विज्ञान विभाग

प्राचार्य अनुक्रम

क्रमांक	प्राचार्य	कार्यकाल
1.	श्री विश्वनाथ सिंह	01.09.1964 से 30.06.1983
2.	श्री चन्द्रकिशोर सिंह	01.07.1983 से 10.10.1984
3.	डॉ. उग्रसेन प्रताप शाही	11.10.1984 से 30.06.1999
4.	डॉ. उदय नारायण पाण्डेय	01.07.1999 से 31.01.2003
5.	डॉ. उदय प्रताप सिंह	01.02.2003 से 10.07.2003
6.	श्री सुरेन्द्र सिंह	11.07.2003 से 07.07.2004
7.	डॉ. रणजीत सिंह	08.07.2004 से 24.05.2011
8.	डॉ. बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव	25.05.2011 से 30.06.2014
9.	श्री ईश्वर शरण श्रीवास्तव	01.07.2014 से 30.06.2015
10.	डा. राकेश प्रताप सिंह	01.07.2015 से 29.012.2016
11.	श्री अनिल प्रताप चन्द	30.12.2016 से 30.09.2020
12.	प्रो. अरविन्द कुमार सिंह	01.10.2020 से कार्यरत

महाविद्यालय परिवार

प्रो. अरविन्द कुमार सिंह

प्राचार्य
मो0 9415037849, 9936678170
www.sppgcollege.in, E-mail : shivpatipgcollege@gmail.com

प्राध्यापक कला संकाय

1.	श्री अनिल प्रताप चन्द	-	प्रा. इतिहास विभाग	9473830467
2.	प्रो. अरविन्द कुमार सिंह	-	भूगोल विभाग	9415037849
3.	डॉ. महेन्द्र गिरि	-	हिन्दी विभाग	9451669563
4.	डॉ. सुशील कुमार	-	समाजशास्त्र विभाग	9554148355
5.	डॉ. अमित सिंह	-	अंग्रेजी विभाग	9457446498
6.	डॉ. अरविन्द कुमार सिंह	-	अर्थशास्त्र विभाग	7839280368

प्राध्यापक विज्ञान संकाय

1.	कै. मुकेश कुमार	-	भौतिक विज्ञान विभाग	9454151378
2.	श्री विनोद कुमार सिंह	-	रसायन विज्ञान विभाग	8604329359
3.	डॉ. अखिलेश शर्मा	-	प्राणि विज्ञान विभाग	9984127177
4.	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	-	प्राणि विज्ञान विभाग	9415528080
5.	डॉ. रामकिशोर सिंह	-	भौतिक विज्ञान विभाग	9718631250
6.	डॉ. उमाशंकर प्रसाद यादव	-	भौतिक विज्ञान विभाग	9838317270

प्राध्यापक शिक्षक शिक्षा विभाग (बी.एड.)

1.	डॉ. प्रमोद कुमार मिश्र	-	बी.एड. विभाग	9450884213

केन्द्रीय पुस्तकालय

1.	डॉ. धर्मेन्द्र सिंह	-	प्राणि विज्ञान विभाग	9415528080

कार्यालय

1.	श्री पंकज कुमार सिंह	-	कार्यालय अधीक्षक	9415193779, 9839761474
2.	श्री रत्नेश कुमार सोनी	-	लेखाकार	9415512714
3.	श्री राजीव कुमार मिश्र	-	कनिष्ठ लिपिक	9838311611
4.	श्री अश्वनी कुमार सिंह	-	स्टेनो/आशुलिपिक	8960216152
5.	श्री राजकुमार सोनकर	-	पुस्तकालय लिपिक	9984554461

प्रयोगशाला सहायक

1.	श्री रवि प्रकाश वर्मा	-	वरिष्ठ प्र.स	8318779196
2.	श्री अमित कुमार सिंह	-	कनिष्ठ प्र.स.	9839261255
3.	श्री मो. शमशीरूल इस्लाम	-	कनिष्ठ प्र.स.	8090207107
4.	श्री प्रेमचन्द्र	-	कनिष्ठ प्र.स.	9839211893
5.	श्री राजीव कुमार वर्मा	-	कनिष्ठ प्र.स.	9919444238

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

1. श्री नागे
2. श्री प्रदीप कुमार मिश्र
3. श्री रामनरेश
4. श्री राजेश्वर प्रसाद
5. श्री रविन्द्र कुमार
6. श्री रामचन्द्र
7. श्री राम चन्दर
8. श्री अम्बिका शुक्ला
9. श्री पंकज गौड़
10. श्री सुबाष यादव
11. श्री प्रतीक कुमार मिश्र
12. श्री सुरेन्द्र कुमार
13. श्री विनोद कुमार
14. श्री रवीश चन्द्र चौबे
15. श्री आनन्द राज सिंह
16. श्री बलराम चौधरी
17. श्री शिवशंकर यादव
18. श्री संजय कुमार
19. श्री अनिल कुमार
20. श्री अविनाश कुमार
21. श्री सुशील कुमार यादव
22. श्री दिनेश कुमार
23. श्रीमती पूनम श्रीवास्तव

संकाय (Faculty)

अपने स्थापना काल से ही महाविद्यालय उच्च गुणवत्तापरक अध्ययन-अध्यापन के लिए ख्याति प्राप्त रहा है। किसी भी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय की पहचान उसके संकाय तथा अध्यापन से ही होती है। अपने स्थापना काल से ही महाविद्यालय में कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा शिक्षा-प्रशिक्षण संकाय के अन्तर्गत अध्यापन होता रहा है।

कला संकाय में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, प्रा० इतिहास, अर्थशास्त्र, गृह विज्ञान तथा भूगोल विषय छात्रों की अभिरूचि, अनुसार उपलब्ध है। स्नातकोत्तर स्तर पर भूगोल (सीट-40) की मान्यता प्राप्त हो चुकी है। जब कि विज्ञान संकाय में रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, वनस्पति विज्ञान एवम् प्राणिविज्ञान विषय का अध्ययन-अध्यापन होता है। इस महाविद्यालय की पहचान उच्च कोटि का अध्ययन, अनुशासन तथा समयबद्ध ढंग से पाठ्यक्रम को पूरा करना रहा है। अध्ययन-अध्यापन के साथ ही परीक्षा की पवित्रता एवम् शुचिता भी महाविद्यालय की पहचान है।

B.Sc. (M) - **120** Seat B.Sc. (B) - **120** Seat	B.A. - **286** Seat M.A. (Geography) - **40** Seat	M.A. (A. H.) - **60** Seat M.A. (Hindi) - **60** Seat

B.Ed. - **50** Seat

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह
प्राणिविज्ञान विभाग

प्रयोगशाला

प्रायोगिक कार्य, वैज्ञानिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रयोगशाला में प्रयोगों के सारगर्भित उद्देश्य होते हैं। प्रयोगों से किसी अवधारणा या सिद्धान्त को सिद्ध करना तथा ज्ञान के सृजन की प्रक्रिया के दौरान साक्ष्यों से विद्यार्थियों में तर्क-वितर्क की क्षमता का विकास होता है। प्रयोगशाला में ही आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों को देखने, उसकी कार्य पद्धति को देखने-समझने का अवसर मिलता है। इसी तरह प्रयोगशाला में विज्ञान की प्रकृति तथा वैज्ञानिक किस प्रकार कार्य करते हैं तथा उस अनुभव और समझ का विकास होता है। इन्हीं प्रयोगशालाओं में भविष्य के वैज्ञानिक तथा मानवता के लिए लाभदायक उपकरण तथा रसायनों का निर्माण होता है।

इस महाविद्यालय में स्थापना काल से ही पाँच सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं। यथा-रसायन विज्ञान प्रयोगाशाला, भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला, वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला, प्राणि विज्ञान प्रयोगशाला, तथा भूगोल प्रयोगशाला जो कि उच्च कोटि के संसाधनों से परिपूर्ण है।

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह
प्राणि विज्ञान विभाग

सेमिनार

विश्वविद्यालयों एवम् महाविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ शैक्षिक उन्नयन के लिये सेमिनार, कांफ्रेस, सिम्पोजियम, वर्कशॉप आदि नामों से राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। नामों में विभिन्नता हो सकती है परन्तु इनका एक मात्र लक्ष्य होता है, वह है - शैक्षिक उन्नयन। इन संगोष्ठियों में देश-विदेश के चिंतक, वैज्ञानिक, शिक्षाविद, छात्र-छात्राएँ भाग लेते हैं और विषय विशेष पर मीमांसा करते हैं और एक दूसरे की विचारधारा/अनुशीलन से लाभान्वित होते हैं।

यह महाविद्यालय भी इस तरह के सेमिनार का आयोजन समय-समय पर करता रहा है। तथा यहाँ के प्रगतिशील शिक्षक अवसर की उपलब्धता के आधार पर राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभाग करते रहते हैं। अपनी शैक्षणिक यात्रा में इस महाविद्यालय में तीन राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन हुआ है।

प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित कराने का श्रेय भूगोल विभाग को है जिसके संयोजक (**Convenor**) डॉ. अरविन्द कुमार सिंह, सुप्रसिद्ध भूगोल वेत्ता एवम् पर्यावरणविद् थे। आयोजन वर्ष-2004।

भूगोल विभाग द्वारा आयोजित सेमिनार का विषय था – **Literacy and Rural Development** (साक्षरता और ग्रामीण विकास),इस सेमिनार के मुख्य अतिथि प्रो० रेवती रमण पाण्डेय, कुलपति दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय थे।

(**Guest of Honour**) मा0 श्री जय प्रताप सिंह जी थे (पूर्व में आबकारी एवम् मद्य निषेध/पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, कैबिनेट मंत्री, उ0 प्र0 शासन)

द्वितीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन का श्रेय प्राणि विज्ञान विभाग को है, जिसके संयोजक डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव थे। यह सेमिनार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत था। आयोजन का शैक्षणिक वर्ष 2010-11 एवम् विषय था-

"Challenges For Biosciences in 21st Century"

इसी शैक्षणिक उन्नयन के क्रम में तृतीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन का श्रेय वनस्पति विज्ञान विभाग को, वर्ष 2010-11 में मिला। इस संगोष्ठी के आयोजन सचिव सिद्धार्थ रत्न, सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् डॉ.बी.सी. श्रीवास्तव थे। इस संगोष्ठी का विषय था-

"Status of Biodiversity : A matter of Global Concern"

डॉ. ए. के. श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष प्राणिविज्ञान विभाग एवं डॉ. ए. के. सिंह, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग विभिन्न सेमिनारों, संगोष्ठियों में विषय विशेषज्ञ (**Resource Person**) के रूप में आमंत्रित किए जाते रहे हैं।

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह
परीक्षा प्रभारी

NAAC
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

नैक (NAAC)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् की स्थापना वर्ष 1994 में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों का आकलन एवम् प्रत्यायन के उद्देश्य से किया गया था नैक (**NAAC**) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की एक स्वायत्यशासी संगठन है तथा इसका मूल कार्य किसी शैक्षिक संस्था की गुणवत्ता की स्थिति का मूल्यांकन करना होता है। गुणवत्ता के मूल्यांकन निमित्त सात सूत्रीय मानक का निर्धारण इस संस्था द्वारा किया गया है। यथा संस्था का प्रदर्शन, पाठ्यक्रम चयन एवम् कार्यान्वयन, शिक्षण अधिगम एवं मूल्यांकन तथा छात्रों के परिणाम, संकाय सदस्यों का अनुसंधान कार्य एवम् प्रकाशन, बुनियादी सुविधाएँ तथा संसाधनों की स्थिति एवम् छात्र सेवायें इत्यादि हैं।

नैक के कठिन मानकों तथा गुणवत्ता के लिए नैक के दिशा निर्देशों के अनुसार गठित IQAC के निर्देशन में महाविद्यालय में नैक की तीन सदस्यीय पीयर टीम ने सत्र 2011-12 में महाविद्यालय का भ्रमण किया।

पीयर टीम की संस्तुतियों के आधार पर महाविद्यालय को सी.जी.पी.ए. स्केल में 2.27 स्कोर मिला, (वर्ष 2012) जिसका सामान्य अर्थ है कि बी ग्रेड अर्थात अच्छा। (*) हिमालय की तलहटी में, सुदूर तराई क्षेत्र में स्थित, गरीबी एवम् अशिक्षा के आवरण से ढके इस क्षेत्र के महाविद्यालय के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। जबकि तत्कालीन दी.द.उ. गोरखपुर वि.वि. से सम्बद्धता प्राप्त और विश्वविद्यालय स्वयं 'बी ग्रेड' के क्रम में था अर्थात महाविद्यालय का स्तर विश्वविद्यालय के सापेक्षिक रूप से समतुल्य था और उस समय तक गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त केवल तीन महाविद्यालय ही नैक मूल्यांकन का साहस कर सके थे।

इस तरह महाविद्यालय अपने स्थापना के मूल उद्देश्यों को चरितार्थ करती हुई, गुणवत्तापरक शिक्षा एवम् परीक्षा की शुचिता के लिए संकल्पबद्ध है।

* नैक द्वारा मूल्यांकन पश्चात् प्रदत्त प्रमाण-पत्र की वैधता पाँच वर्षों के लिए ही मान्य होती है।

श्री अश्विनी कुमार सिंह
स्टेनो

छात्रावास

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति में प्रत्येक छात्र के लिए गुरुकुल के छात्रावास में रहना अन्तर्निहित रहता था। इसमें विद्यार्थी गुरु के परिवार के साथ, गुरू के सानिध्य में रहकर विद्यार्जन करता थ । इस व्यवस्था में गुरु और शिष्य एकात्म होकर विद्या और धर्म (संस्कार) सीखते थे ।इस तरह अनुशासन और शिष्टाचार पर विशेष बल रहता था तथा छात्र का सर्वांगीण विकास होता था ।

समय एवम् परिस्थितियों के अनुसार छात्रावास के मानक परिवर्तित होते रहे परन्तु छात्रावास में रहने का उद्देश्य आज भी यथावत है । विद्यार्थी का प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय कर्त्तव्य है- केवल और केवल अध्ययन करना। महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही महाविद्यालय के छात्रावास की भी नींव पड़ी । छात्रावास संस्थापक प्राचार्य स्व० श्री विश्वनाथ सिंह के नाम से प्रतिष्ठित है । महाविद्यालय परिसर से दूरी पर महाविद्यालय का छात्रावास अवस्थित है यद्यपि ग्रामीण अंचल में होने के कारण कुछेक सुविधाओं से छात्रावास वंचित रहा । वर्तमान में छात्रावास में 44 विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था, बिजली के पंखे, वाटर सप्लाई तथा शौचालय की व्यवस्था है। छात्रावास परिसर के साथ ही कुँवर वीरेन्द्र सिंह ग्रामीण स्टेडियम है ।

डॉ. राम किशोर सिंह

छात्रावास अधीक्षक

पुस्तकालय

पुस्तकालय किसी महाविद्यालय की आत्मा होती है। किसी भी महाविद्यालय की पहचान उसके गुरुजन अध्यापन की विधि एवं एक अच्छे पुस्तकालय से होती है । पुस्तकालय ज्ञान विज्ञान का केन्द्र होता है । अपने शैशवाकाल से ही महाविद्यालय में समृद्ध पुस्तकालय रहा है ।

इस पुस्तकालय में लगभग 34,000 पुस्तकें हैं जिसमें लगभग 30,000 पाठ्य पुस्तकें तथा शेष संदर्भ ग्रथ एवं मैगजीन्स हैं । पुस्तकालय की छात्र-पुस्तक अनुपात 1ः 20 है । किसी भी कार्य दिवस में पुस्तकालय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक अध्ययन के लिए खुला रहता है जबकि परीक्षा अवधि में पुस्तकालय का समय प्रातः 10.00 बजे से अपराहन 2.00 बजे तक होता है। इस पुस्तकालय के प्रथम पुस्तकालयाध्यक्ष होने का गौरव श्री जयप्रकाश उपाध्याय को है श्री उपाध्याय के पश्चात् उनके कुशल उत्तराधिकारी के रूप में श्री प्रेम कुमार पाण्डेय ने नवम्बर 1,1976 को पदभार ग्रहण किया और अनवरत जून 30, 2017 को पुस्तकालयाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए।

श्री प्रेम कुमार पाण्डेय के सेवानिवृत्ति पश्चात् पुस्तकालयाध्यक्ष पद की गुरुतर जिम्मेदारी डॉ0 अजय कुमार श्रीवास्तव विभागाध्यक्ष, प्राणि विज्ञान में निहित थी। तत्पश्चात् पुस्तकालय की महती जिम्मेदारी महाविद्यालय के कर्मठ, अनुशासन प्रिय, भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष डा. अरविन्द कुमार सिंह में निहित रही प्रो. सिंह के पश्चात् पुस्तकालय की गुरूत्तर जिम्मेदारी डा. धर्मेन्द्र सिंह, परीक्षा प्रभारी, असि. प्रो. प्राणि विज्ञान विभाग में निहित है।

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह, पुस्तकालय प्रभारी

N.S.S./N.C.C.

N.S.S.
(राष्ट्रीय सेवा योजना)

युवाओं के व्यक्तित्व विकास हेतु युवा एवम् खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम है इसकी गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी (स्वयंसेवक), समाज के लोगों के साथ सामाजिक हित में कार्य निष्पादित करते हैं। साक्षरता, पर्यावरण सुरक्षा स्वास्थ्य, स्वच्छता, प्राकृतिक आपदा एवम् अन्य आपातकालीन परिस्थितियों में समाज की सेवा ही इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। इससे समाज सेवा, राष्ट्रसेवा की भावना प्रबल होती है। और एक आदर्श नागरिक का निर्माण होता है। राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्मशती वर्ष 1969 में 37 विश्वविद्यालयों में लगभग 40,000 स्वयंसेवकों के साथ शुरू हुई थी।

महाविद्यालय में वर्तमान में राष्ट्रीय सेवा योजना की दो इकाई सामाजिक चेतना का प्रचार-प्रसार कर रही है।

डा. अरविन्द कुमार सिंह
वरिष्ठ कार्यक्रमाधिकारी

डा. रामकिशोर सिंह
कार्यक्रमाधिकारी

N.C.C.

देश के नौजवानों में विद्यार्थियों में देश की स्वतंत्रता और अखण्डता की रक्षा के लिए युवाओं को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने वर्ष 1948 में राष्ट्रीय कैडेट कोर अधिनियम प्रवर्तित किया। इसका प्रशिक्षण स्वैच्छिक होता है।

इस महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 1988-89 से NCC का औपचारिक रूप से शुभारम्भ हुआ, इस महाविद्यालय में 46वें UP Battalion की इकाई 1 PL3/46 UP- NCC वाहिनी में 54 सीटें आवंटित हुई तथा महाविद्यालय के NCC की कमान डॉ. आर. पी. सिंह, सेकण्ड लेफ्टिनेन्ट को सौंपी गई तथा डा. सिंह कैप्टन' के पद से सेवानिवृत्त हुए। तत्पश्चात क्रमशः डॉ. ए. के. सिंह, भूगोल विभाग एवम्, डॉ. पी. के. मिश्र, बी. एड. विभाग ने कुछ समय तक केयर टेकर बनकर प्रशिक्षण की गति को रूकने नहीं दिया।

फरवरी 2008 से एन.सी.सी. की कमान ले0 मुकेश कुमार जैसे उर्जावान प्रभारी के कुशल नेतृत्व में है तथा श्री कुमार वर्तमान में कैप्टन पद पर सुशोभित होकर कार्यों का कुशल निष्पादन कर रहे हैं।

वर्ष 2011 में भारत सरकार की नीतियों के अनुसार महिला सशक्तीकरण की योजना के अन्तर्गत 33% सीटें महिला अभ्यर्थियों के लिए आवंटित कर दी गई अर्थात अब 36 सीटे पुरुष कैडेट्स के लिए तथा 18 सीटें महिला कैडेट्स के लिए सुरक्षित रहती है।

कै. मुकेश कुमार
46वं बटालियन

इतिहास में गुम बलिदान की गाथाएं

भारत में जलियांवाला बाग जैसी जघन्य घटना से तो हर कोई परिचित है, पर देश में ऐसे अनगिनत अछूते स्थल हैं, जहां की मिट्टी को चूमने और उसका तिलक करने का मन बार–बार करता है। यह बहुत स्वाभाविक भी है, क्योंकि देश की आजादी की खातिर उन्होंने अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। देश को आजादी दिलाने के लिए न जाने कितने देशभक्तों ने अपने प्राणों का बलिदान किया, लेकिन वे न तो इतिहास लेखन का हिस्सा बन सके और न ही पाठ्यकम का ऐसा ही एक स्थल है, मानगढ़ धाम। राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में स्थित यह एक ऐसा स्मारक है, जो गुरुभक्ति और देशभक्ति को एक साथ दर्शाता है। करीब सौ साल पहले 17 नवंबर, 1913 को मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर गुरु का जन्मदिन मनाने के लिए एकत्र हुए हजारों गुरुभक्तों को ब्रिटिश सेना ने मौत के घाट उतार दिया था। पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वहां जाकर आदिवासियों के इस प्रमुख तीर्थ स्थल को राष्ट्रीय स्मारक का दर्जा दिया । मानगढ़ धाम में जो नरसंहार हुआ, वह अंग्रेजी हुकूमत की क्रूरता की पराकाष्ठा थी। वहां करीब डेढ़ हजार महिलाओं, बुजुर्गों और युवाओं को घेरकर मौत के घाट उतार दिया गया था। यह शायद पहली बार है, जब देश ने मानगढ़ धाम के बारे में विस्तार से जाना ।

इसी तरह का एक स्थल उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले में है, जहां अंग्रेजों ने एक साथ 52 क्रांतिकारियों को इमली के पेड़ पर लटका दिया था, लेकिन इतिहासकारों की पूर्वाग्रही दृष्टि ने इतनी बड़ी घटना को गुमनामी के अंधेरों में ढके रखा। बावनी इमली एक इमली का पेड़ है, जो भारत में शहीद स्मारक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। उसी इमली के पेड़ पर 28 अप्रैल, 1858 को ब्रिटिश सेना ने गौतम क्षत्रिय, जोधा सिंह अटैया और उनके 51 साथियों को फांसी पर लटका दिया था। यह स्मारक फतेहपुर जिले के बिंदकी तहसील स्थित खजुआ कस्बे के निकट मुगल रोड पर है। यह स्मारक स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए बलिदानों का प्रतीक है। इसी तरह 1857 की क्रांति के दौरान रुड़की में अंग्रेजों द्वारा सैकड़ों देशभक्तों को वट वृक्ष पर लटका कर फांसी दे दी गई थी। दरअसल वहाँ के किसानों ने अंग्रेजी हुकूमत का कड़ा प्रतिवाद किया था। परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने उनका दमन किया था। आजादी की शानदार विरासत को समेटे वह वट वृक्ष आज भी पूरी शान से खड़ा है।

कानपुर में 1857 में बीबीघर के अहाते में खड़े बरगद के पेड़ पर हुई घटना ने भी सबको हिलाकर रख दिया था, क्योंकि अंग्रेजों द्वारा उसकी शाखाओं पर 133 लोगों को फांसी पर लटका दिया गया था। यह घृणित काम 25 जुलाई, 1857 को हैवलाक कर्नल नील ने किया था। कर्नल नील भारतीयों के लिए हैवान था। नील के एक पत्र से उसकी क्रूर मानसिकता का पता चलता है। पत्र में उसने लिखा था कि मैं हिंदुस्तानियों को दिखा देना चाहता हूं कि हमारे द्वारा दिए दंड से उनकी रूह कांप उठेगी और वे उसे कभी भूल नहीं पाएंगे। बीबीघर के फर्श पर जमे रक्त को कर्नल नील हिंदुस्तानियों से साफ कराता था। जो इससे इन्कार करते थे उन पर कोड़े बरसाए जाते थे। उसके बाद उन्हें फांसी दे दी जाती थी। वह बूढ़ा बरगद आज भी 133 लोगों की फांसी का मूक गवाह है।

इसी तरह बस्ती जिले के छावनी कस्बे में एक पेड़ पर तमाम क्रांतिकारियों को एक साथ फांसी दी गई थी। आज भी वह कस्बा उनके बलिदान का गवाह है। वास्तव में 1857 में देश की आजादी की लड़ाई में कई लोगों ने बलिदान दिया था, लेकिन हमें उनमें से अधिकतर लोगों के नाम की जानकारी नहीं है। जैसे डुमरियागंज में 26 नवंबर, 1858 को 80 से अधिक क्रांतिकारी अंग्रेजों से संघर्ष में वीरगति को प्राप्त हुए थे, जिसका जिक्र आज तक इतिहास के पन्नों में नहीं है। उस घटना के अनुसार बिग्रेडियर कमांडिंग गोरखपुर को सूचना मिली कि डुमरियागंज से एक मील दक्षिण में आम के बगीचों में लगभग 1000 क्रांतिकारी मौजूद हैं। इस सूचना पर एक अंग्रेज अफसर अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ वहां पहुंचा। इसकी भनक क्रांतिकारियों को भी लग गई। उन्होंने भी तैयारी कर ली। अंततः अंग्रेजों और क्रांतिकारियों के बीच भीषण संघर्ष हुआ । इसमें 80 से ज्यादा क्रांतिकारी मारे गए और कई की मृत्यु नदी में डूबने से हो गई, जिसका जिक्र आज भी इतिहास के पन्नों से गायब है। उस संघर्ष के दौरान कैप्टन गी फोर्ड और घुड़सवार अंग्रेज सिपाही की भी मौत हुई थी। उनकी कब्रें आज भी बनी हैं। उस लड़ाई में बंदूकों और तोपों का जमकर इस्तेमाल हुआ था। उसका विवरण लंदन गजट में प्रकाशित है।

डुमरियागंज का अमरगढ़ ताल भी फिरंगियों की बर्बरता का मूक गवाह है। वहां भारतीय जवानों ने दो बार ब्रिटिश सेना को शिकस्त दी थी। उन्होंने बांबे आर्मी कमांडर आफ चीफ एल्ड्रिन गुशन को मौत के घाट उतार कर अंग्रेजी हुकूमत के दांत खट्टे कर दिए थे। आजादी के परवानों ने वीरता की ऐसी दास्तान लिखी कि आने वाली पीढ़ी उन्हें श्रद्धा से नमन करती रहेगी। उन क्रांतिकारियों की याद में हर वर्ष नवंबर के आखिरी सप्ताह में वहां पर एक मेला लगाकर बलिदानियों को श्रद्धांजलि देने की एक परंपरा का शुभारंभ पिछले कुछ वर्षों से हुआ है। त्याग और बलिदान के ऐसे स्थलों का उसी तरह स्मरण किया जाना चाहिए, जैसे जलियांवाला बाग का किया जाता है। हालांकि, यह तभी हो सकता है, जब ऐसे स्थलों और बलिदानियों को इतिहास का हिस्सा बनाया जाए और पाठ्यक्रम के जरिये नई पीढ़ी से परिचित कराया जाए। आजादी के अमृत काल में स्वतंत्रता के इन गुमनाम सिपाहियों को याद करके पीढ़ियां कृतार्थ होंगी।

प्रो. अरविन्द कुमार सिंह
प्राचार्य

सुरक्षित यातायात

सुरक्षा के मानकों को अनदेखी आए दिन किसी न किसी रूप में देखने को मिलती है। सुरक्षा के लिए बने नियमों को तोड़कर लोग प्रायः खुश होते हैं, लेकिन पलभर की छदम् खुशी जीवनभर के लिए अभिशाप बन जाती है, सुरक्षा के लिए बने मार्गदर्शक सिद्धान्तों की अवहेलना कदापि न करें, यह आपकी सुरक्षा के लिए, आपकी सुविधा के लिए बनाये जाते हैं। प्रत्येक दिवस हरेक चौराहों पर आपको 'ट्रिपल सवारी' किसी बाइक पर यात्रा करते हुए दिख ही जाते हैं तथा पूछे जाने पर किसी न किसी 'इमरजेंसी' की बात बताते हैं परन्तु ऐसी भी क्या इमरजेंसी जो आपको 'इमरजेंसी कार्ड' तक पहुंचा दें क्योंकि बाइक पर दो से ज्यादा सवारी बैठने पर बाइक हमेशा असंतुलित ही रहती हे। बाइक सवार हेलमेट भी मजबूरी में ही पहनते हैं जबकि इसे पहनना बाइकर्स के लिए नितान्त आवश्यक है क्योंकि दुर्घटना के समय यही हेलमेट 'हेड इंजरी' से बचाती है तथा दुर्घटना के वक्त हेड इंजरी ही मौत का कारण बनती है तथा मौत एक ऐसी बला है जो आपको गलती सुधारने तथा पश्चाताप का मौका भी नहीं देती है।

'ओवर स्पीड' भी दुर्घटना का एक प्रमुख कारण है। 'दुर्घटना से देर भली' के कहावत को लोग प्रायः अनदेखी ही करते हैं। थोड़े से समय बचाने के चक्कर में लोग अपनी सवारी को ओवर स्पीड कर लेते हैं तथा यही तेज उन्हें दूसरी दुनिया का निवासी बना देती है। याद रखें घर पर आपका परिवार, आपके बच्चे आपकी राह देख रहे होंगे। थोड़ा सा इंतजार, थोड़ा सा बर्दास्त करना सीखें तो यकीनन आप बेवजह की मुसीबतों से बच सकते हैं।

आजकल अव्यस्क तथा अल्पव्यस्क बच्चे भी बाइकिंग करते प्रायः दिखते हें। प्रत्येक माँ-बाप को चाहिए कि बच्चे के कानूनी उम्र सीमा की प्राप्ति तक के समय का इंतजार करें तत्पश्चात किसी प्रशिक्षित ट्रेनर की सहायता से उसे ट्रैफिक नियमों को बताते हुए बाइक चलाने के प्रशिक्षण की व्यवस्था दे तथा लर्निंग पीरियड में हमेशा अपनी संरक्षा में ही रखें। ड्राइविंग करते समय सारा ध्यान केवल ड्राइविंग पर ही होना चाहिए, अक्सर देखा जाता है कि लोग ड्राइविंग तथा मोबाइल पर बाते साथ-साथ करते हैं, दो नावों की सवारी वैसे भी बुरी मानी जाती है, इससे सावधानी हटी, दुर्घटना घटी वाली कहावत चरितार्थ होती है। यात्रा करते समय ट्रैफिक नियमों की अनदेखी कत्तई न करें, यात्रा का परिणाम सुखद ही होना चाहिए। यदि इन सब बातों को ध्यान में रखें तो आपकी यात्रा निःसंदेह सुखद ही होगी।

अनेक विद्यालयों के प्रबंधक तथा शिक्षाविद् एवं प्राचार्य अरविन्द सिंह के अनुसार विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में 'यातायात जागरूकता' विषयक कैम्प लगाकर युवाओं को यातायात के नियमों के प्रति जागरूक तथा उन्हें उनकी जिम्मेदारी का बोध कराना चाहिए।

लोगों को जागरूक करके ही इस समस्या पर अंकुश लगाया जा सकता है।

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह, असि. प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान विभाग

Role of Science in Environment Culture

Captain Mukesh Kumar
(Associate Prof. & Head)
Department of Physics

In Today's world when science and environment has penetrated into every sphere of life, now can lives of especially abled person remain untouched severity of many of the impairments mentioned can be reduced by environment. Environment can help specially abled person to bad an independent and near normal life.

Environmental culture is the study of human adaptations to social and physical environments. Human adaptation refers to both biological and cultural processes that enable a population to survive and reproduce within a given or changing environment. This may be carried out diachronically of synchronically. The central argument is that the natural environment in small scale or subsistence societies dependent in part upon it, is a major contributor to social organization and other human institutions. Anthropologist julian steward (1902-1972) coined the term, envisioning cultural ecology as a methodology for under methodology for under standing how humans adapt to such a wide variety of environments. In this theory of culture change. The methodology of multi linear evolution (1955), cultural ecology represents the ways in which culture change is induced by adaptation to the environment.

A key point is that any particular human adaptation is in part historically inherited and in values the technologies, practices and knowledge that allow people to line in an environment. This means that while the environment influences the characters of human adaptation, it does not determine it. In this way, steward wisely separated the vagaries of the environment from the inner workings of a culture that occupied a given environment. This means that environment and culture are on more or less separate evolutionary tracks and that the ability of one to influence the other is dependent of how each is structured. The Physical and biological environment affects culture- that has proceed controversial, because it implies an element of environmental determinism over human actions, which some social scientist find problematic, particularly those writing from a marxist perspective cultural ecology recognizes that ecological local plays a significant role in shaping the cultural of a region. Environmental policy and management issues play out over decades or longer and benefit from the continuous advances in understanding that are deiced from long term research policy development is an iterative process that requires on going assessment, revaluation, adaptive management and consideration of future scenarios. For examples although the clean Air act was first passed by congress in 1972, the development of amendments, and rules to implement the act are ongoing and rules on quantitative information to evaluate the effectiveness of pollution control measures and to guide program management.

Conceptual views Human Species :– Books about culture and ecology began to emerge in the 1950's and 1968's. One of the first to be publised in the united kingdom was the Human species by a zoologist, Anthony Barnett. It deals with the cultural bearing of some out standing areas of environmental knowledge about health and disease food the sizes and quality of human populations and the diversity of human types and their abilities. Barnett's view was that his selected areas of information. "Are all topics on which knowledge is not only desirable, but for twentieth centaury adult, necessary. The evolution of men and the differences between men and women today in relation to population growth.

In the first decade of the 21th century, there are publications dealing with the ways in which humans can develop a more acceptable cultural relationship with the environment. An example is sacred ecology, a sub topic of cultural ecology, produced by Fikret Berkes in 1999. It seeks lesson's from traditional ways of life in northern canada to shape a new environmental per caption for urban dwellers. This particular con ceptualisation of people and environment comes from various cultural levels of local knowledge about species and place, resource management systems using local experience social institutions with their rules and codes of behaviour and a world view through religion ethics and broadly defined belief system.

Conclusions :— It science is to aid in the advance toward a more resilient and sustainable society we must experiment with more effective means of integrating ecological research and decision making. As is evidenced by the fine case studies presented here for forest eco systems and unique role to play in addressing the grand challenges in environmental science.

Reference :—

1. Barnett. A 1950 the human species.
2. Berkes, F. 1999 sacred ecology : "Traditional ecological knowledge and resource management".
3. Hornborg, Aef; cultural ecology.

वायु प्रदूषकों के प्रभाव

कार्बन मोनोऑक्साइड (CO)

यह हवा से भारी, पानी में अघुलनशील, रंगहीन एवं गंधहीन गैस है। जो मानव एवं प्राणियों के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इसे दमघोंट गैस भी कहते हैं। साँसों के माध्यम से शरीर में पहुँचकर रक्त में उपस्थित हीमोग्लोबिन की ऑक्सीजन वहन क्षमता को बिल्कुल कम कर देती है। जिसके फलस्वरुप मनुष्य की मृत्यु भी हो जाती है। इस गैस की उत्पत्ति जीवाश्म ईधनों जैसे- कोयला और खनिज तेल के अपूर्णदहन (Imperfect Burning) के फलस्वरूप होती है।

CNG और LPG गैसों के प्रयोग से इस समस्या का निदान काफी सीमा तक किया जा सकता है।

नाइट्रोजन के आक्टसाइड (NO_2)

नाइट्रोजन के ऑक्साइड वायुमण्डल की नमी से प्रतिक्रिया करके, नाइट्रिक अम्ल (HNO_3) का निर्माण करते हैं। जो वर्षा के पानी के साथ, धरातल पर अम्ल वर्षा (Acid-Rain) के रुप में धरती पर आ जाते है। यह अम्ल वर्षा समस्त जीवधारियों के लिये अत्यन्त हानिकारक है। मनुष्य के शरीर में नाइट्रिक ऑक्साइड के अधिक सान्द्रण के कारण निम्न बीमारियाँ हो जाती है जैसे- मसूड़ों में सूजन, रक्त-स्राव, निमोनिया, फेफड़े का कैंसर इत्यादि।

सल्फर के ऑक्साइड (SO_2)

यह वायु प्रदूषण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रदूषक है। इसकी उत्पत्ति कोयला, खनिज तेल, तथा स्वचलित वाहन आदि द्वारा होती है। SO_2 से आँखों में जलन, दमा (Asthama), खाँसी, फेफड़ों के रोग, सिर दर्द, चक्कर आना और साँस लेने में कठिनाई, जैसी समस्या बढ़ जाती है। यह गैस वातावरण की नमी को अवशोषित करके सल्फ्यूरिक अम्ल (H_2SO_4) बनाती है। जो वर्षा के पानी के साथ अम्ल वर्ष (Acid-Rain) के रूप में धरती पर आ जाते हैं जिसके कारण कृषि फसलों, वनों, जीव-जन्तु एवं मनुष्य को अपूर्णीय क्षति होती है। SO_2 के कारण भवनों में संक्षारण (ईटों से पर्त दर पर्त लाल पाउण्डर का निकलना) लग जाता है। जिसके फलस्वरूप पेय जल स्रोत प्रदूषित हो जाते हैं।

क्लोरो-फ्लोरो कार्बन (CFC)

ये क्लोरीन, फ्लोरीन तथा कार्बन तत्वों के साधारण यौगिक है। इनका उत्सर्जन निम्न रुप से हो सकता हैं जैसे- एयर कण्डीशनर एवं रेफ्रीजरेटर में, द्रव पदार्थ (Fluids) के रूप में, इन्सुलेशन फोम या स्टाइरोफोम में, उड़ाने वाले कारक (Blowing Agents) के रूप में, औद्योगिक कारखानों में विलायक (Solvent) के रूप में, आग-बुझाने वाले साधनों जैसे-हेलेन गैस, के रूप में, डियोडोरण्ट (Deodorant) के रूप में, डेयर स्प्रे में, शेविंग क्रीम एवं प्रसाधन-साजसज्जा की सामग्री के रूप में, CFC के उत्सर्जन एवं इनके वायुमण्डल में पहुंचने के कारण ओजोन गैस तथा ओजोन परत का क्षय प्रारम्भ हो जाता है। जिसके

फलस्वरूप, सूर्य की पराबैंगनी किरणें अधिक मात्रा में पृथ्वी पर पहुंचती है। जिस कारण से, त्वचा कैंसर तथा मोतियाबिन्द जैसे रोग होते हैं।

मिथेन (CH_4)

इसके उत्सर्जन के प्राकृतिक स्रोत, धान के खेत, कोयले की खदाने एवं घरेलू पशु आदि हैं समतापमण्डल में CH4 का अधिक सान्द्रण होने से जलवाष्प (Water-Vapour's) में वृद्धि होती है। जो कि ग्रीन हाउस प्रभाव (Green-H-Effect) के लिये उत्तरदायी है। इनके अतिरिक्त कई महत्वपूर्ण प्रदूषक जैसे-शीश (Lead), बैन्जीन, कैडमियम (cd) आदि

नियंत्रण के उपाय-

ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतो जैसे- जैव द्रव्य ऊर्जा (Bio-Mass Energy) ज्वारीय ऊर्जा, सौर ताप ऊर्जा, पवन ऊर्जा एवं जल-विद्युत ऊर्जा आदि को बढ़ावा दिया जाये। वाहनों में CNG को बढ़ावा दिया जाये। डीजल की जगह सल्फर युक्त डीजल या हरित डीजल (Green-Diesel) का प्रयोग किया जाये। अन्य वैकल्पिक इर्धन जैसे- कोलबेड मीथेन, बायोडीजल, आदि का प्रयोग किया जाये।

Vinod Kr. Singh
Assistant Prof.
Department of Chemistry

पिपरहवा : बौद्ध विरासत

उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले में नौगढ़ से 13 मील उत्तर की ओर नेपाल की सीमा पर 'पिपरहवा' नामक प्राचीन बौद्ध पुरास्थल हैं। यहाँ से एक प्राचीनतम बौद्ध स्तूप तथा उसके भीतर रखी हुई बुद्ध के अस्थियों की मंजूषा (Redic Casket) प्राप्त हुई है, जो प्राषाण निर्मित मंजूषा में बुद्ध के शरीर-धातुओं का कुछ अंश रखा गया था। इस बौद्ध स्तूप से एक बड़े पत्थर की पेटी निकली थी जिनमें बुद्ध के शरीर धातु की मंजूषा के अतिरिक्त सैकड़ों प्रकार की कलात्मक वस्तुएं थी जैसे- सुन्दर आकृतियाँ अथवा मूतियाँ रत्न-पुष्प, नीलम, पुखराज, मूंगा, स्फटिक शंख आदि की मणियाँ, सोने के बने स्वर्ण पत्र, सोने के तारागण, त्रिरत्न, सुनहले पतरों पर आहत स्वास्तिक और नन्दिपद आदि। अन्य अवशेषों में कुछ पात्र ढक्क्नदार कटोरे गोल छोटी धातु मंजूषाएं हैं जिनमें उत्कृष्ट कोटी की बारीक शिल्पकला है जो प्राक् मौर्य युगीन कला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं तथा उच्चस्तर की कलात्मक निपुणता को घोषित करते हैं।

पिपरहवा बौद्ध स्तूप उन आठ मौलिक स्तूपों में से एक है जिनका निर्माण बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात् कराया गया था यहाँ उत्कीर्ण ब्राहमी लिपि के एक लेख से पता चलता है कि इसका निर्माण शाक्यों ने करवाया था। शाक्यों ने उनकी शरीर-धातु का एक भाग प्राप्त कर इसे बनवाया था। सम्प्रति स्तूप के अवशेष तथा मंजूषा लखनऊ संग्रहालय में सुरक्षित है। स्तूप से प्राप्त मंजूषा पर दो पंक्तियों का एक संक्षिप्त है। स्तूप से प्राप्त मंजूषा पर दो पंक्तियों का एक संक्षिप्त अभिलेख उत्कीर्ण है जो प्राचीनता की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस अभिलेख की भाषा प्राकृत है और इसकी लिपि ब्राह्मी है। यह अभिलेख मंजूषा (कलश) के गले वाले भाग पर लिखा गया है जिसमें लिखा है कि-

इयं सलिल निधने वुधस भगवते सकियानं
सुकितिभतिनं सभगिनिकनं सपुत दलनं

अर्थात, भगवान बुद्ध के शरीर (अवशेषों) का यह पात्र सुकिर्ति (गौतम बुद्ध) के भाइयों ने अपनी बहनों, पुत्रों, पत्नियों तथा प्रियजनों सहित प्रतिस्थापित किया।

यह अभिलेख निश्चित रूप से कई कारणों से महत्वपूर्ण हैं अनेक विद्वान इसे भारत में अब तक उपलब्ध बाह्मी अभिलेखों में प्राचीनतम मानते हैं। पिपरहवा से ही प्राप्त 'कपिलवस्तु' लेख युक्त मुद्राएं यह प्रमाणित करती हैं कि इस स्थान का समीकरण शाक्यों की राजधानी के साथ स्थापित होता है। बौद्ध ग्रंथ

दीघनिकाय के महापरिनिब्बान सुत्त में यह विवरण मिलता है कि शाक्य बन्धुओं ने बुद्ध के शरीरावशेषों को एक स्तूप का निर्माण कर उसमें सुरक्षित किया था। इस आधार पर पिपरहवा स्तूप की प्राचीनता बुद्ध के महापरिनिर्वाण काल तक पहुँचती है। क्योंकि इसके तत्काल बाद ही उनके भस्मावशेषों का विभाजन हुआ था। पिपरहवा का यह स्तूप अति वृहदाकर का है साथ ही इसमें सुदृढ़ता लाने के लिए धान के पुआल का प्रयोग भी किया गया है। उल्लेखनीय है कि ब्यूलर फ्लीट स्मिथ आदि विद्वानों ने भी इसे अशोक के काल से पहले का माना है। राजबली पाण्डेय इसका समय 483 ई.पू. के लगभग निर्धारित करते हैं जो ऐतिहासिक तथ्यों के परिपेक्ष्य में समीचीन प्रतीत होता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि पिपरहवा पुरास्थल से संबन्धित बौद्ध पुरावशेष बौद्ध युगीन संस्कृति के अध्ययन के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो प्राचीन इतिहास के पुननिर्माण में प्राचीनतम प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। साथ ही पिपरहवा का स्थान बौद्ध धर्म के विरासत को अपने साथ संजोए हुए है।

डॉ. ज्योति सिंह

सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग

उच्च शक्ति लेजर का उपयोग विध्वनाशक हथियार के रूप में

औद्योगिक निर्माण, अंतरिक्ष अन्वेषण, उच्च ऊर्जा भौतिकी के क्षेत्र और रक्षानुसंधान में अनुप्रयोगों की बढ़ती संख्या के साथ आधुनिक समाज में उच्च शक्ति लेजर उपकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेज़र का अर्थ है "विकिरण के उत्तेजित उत्सर्जन द्वारा प्रकाश प्रवर्धन" । लेज़र एक ऐसा उपकरण है जिसमें विद्युत चुंबकीय विकिरण के उत्तेजित उत्सर्जन के माध्यम से ऑप्टिकल प्रवर्धन की प्रक्रिया द्वारा प्रकाश उत्सर्जित किया जाता है। लेज़र का आविष्कार और डिजाइन थियोडोर मैमन ने वर्ष 1960 में किया था जिसके लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार दिया गया। किसी भी स्रोत से निकलने वाली लेसर किरणों में एकवर्णता, दिशात्मकता, संबद्धता तथा उच्चतीव्रता गुण होते हैं। लेज़र के आविष्कार के बाद से, शोधकर्ता नई सामग्रियों और तकनीकों की खोज करके लेज़रों की शक्ति (या ऊर्जा) को बढ़ा रहे हैं। लेजर प्रसंस्करण, जड़त्वीय कारावास संलयन, अंतरिक्ष मलबे का पता लगाने और इमेजिंग रडार सहित कई अनुप्रयोग कुशल लेजर उत्सर्जन, प्रवर्धन, आवृत्ति रूपांतरण और पहचान पर निर्भर करते हैं। इसी तरह, लेज़रों के अनुप्रयोग उच्च शक्ति वाली लेज़र तकनीक के विकास के लिए एक शोध दिशा भी प्रदान करते हैं ।

उच्च शक्ति वाले लेजर का उपयोग करते हुए इजराइल ने दुनिया के पहले लेजर मिसाइल डिफेंस सिस्टम का सफल परीक्षण इसी वर्ष (2022) किया है। इस डिफेंस सिस्टम की मदद से ड्रोन, मोर्टार, रॉकेट और एंटी-टैंक मिसाइलों को एक ही हमले में तबाह किया जा सकता है। इस सिस्टम को इजराइल की हाईटेक डिफेंस एजेंसी राफेल एडवांस्ड सिस्टम्स ने तैयार किया है। एंटी मिसाइल सिस्टम में छोटे आकार की गाइडेड मिसाइल दागी जाती है, जो दुश्मन मिसाइल को हवा में ही नष्ट कर देती है। जबकि इस नए हथियार के जरिये लेजर की किरण से दुश्मन के हथियार को नष्ट किया जाता है।

लेजर हमले में न तो आवाज होती है और न ही रोशनी। यह बिना आवाज किए लक्ष्य में छेद कर देती है या उच्च कोटि का तापमान उत्पन्न कर देती है जिससे टारगेट जलकर राख हो जाता है। प्रायः लक्ष्य एक जगह स्थिर नहीं होता है इसीलिए उसे आसानी से नष्ट कर पाना मुश्किल होता है। लेजर हथियार की मदद से प्रकाश की गति से सटीकता के साथ लक्ष्य को निशाना बनाया जा सकता है। इस उपकरण की मदद से एक साथ कई लक्ष्य को मार गिराया जा सकता है। आर्थिक दृष्टिकोण से लेजर बहुत अधिक हथियार के निर्माण में मिसाइल निर्माण की अपेक्षा लागत बहुत कम आती है। विद्युत आपूर्ति बाधित नहीं हो तो इसे समय तक प्रयोग कर सकते हैं । लेजर हथियारों की मदद से दुश्मन के इलेक्ट्रॉनिक, रेडियो सिस्टम, संचार सिस्टम को भी नष्ट किया जा सकेगा। संचार की कमी और आदेश न दे पाने की स्थिति में दुश्मन कमजोर हो जाता है। इससे उस पर हमला करना और आसान हो जाता है।

भविष्य में पारंपरिक हथियारों की जगह दूर से हमला करने वाले हथियार विकसित हो रहे हैं जिससे जान और माल का नुकसान कम से कम हो। भविष्य में युद्ध अत्यधिक ऊजा वाले यानि लेजर हथियारों से लड़ा जाएगा। भारत में भी ऐसे हथियारों का निर्माण किया जा रहा है जो भारतीय सीमा को सुरक्षित कर, एक मजबूत रक्षा प्रणाली निर्मित करने की ओर अग्रसर है।

डॉ० राम किशोर सिंह

सहायक आचार्य, भौतिक विज्ञान

प्यारे पापा

- रोशनी त्रिपाठी
बी.ए. प्रथम वर्ष

कुबेर तो नहीं
कुबेर सा खजाना है पापा
आसमान तो नहीं
आसमान सा छत है पापा
पहलवान तो नहीं है
पहलवान से रक्षक है पापा
खुदा तो नहीं
फिर भी ख्वाहिश पूरी करते हैं पापा
गौतम बुद्ध तो नहीं
फिर भी हर गलती की माफी देते हैं पापा
महर्षि दधीचि तो नहीं
फिर भी हमारे लिए अपने सुख त्यागते हैं पापा
जज से हैं
फिर भी फैसला नहीं सलाह सुनाते हैं पापा
जेलर से हैं
फिर भी सजा से नहीं प्यार से समझाते हैं पापा
मेरे लिए मेरा जहान हो आप
सबसे बड़ी पहचान हो आप
पापा मेरी लिए पूरा आसमान हो आप।

तरक्की का विकल्प

- सृष्टि पाण्डेय
बी.ए. प्रथम वर्ष

बेटियों को पढ़ा-लिखाकर शिक्षा व्याप्त करेंगे,
समाज में फैली हर बुराई को समाप्त करेंगे।
देश की तरक्की को मिलेगा नया आयाम,
जब बेटियाँ पढ़-लिखकर रोशन करेंगी देश का नाम।
इसलिए इनकी शिक्षा में कोई बाधा न डालो,
इनके शिक्षा को लेकर कोई गलतफहमी ना पालो।
बेटी कल्पना चावला बनकर अन्तरिक्ष माप चुकी है,
अपने इरादों से हर बुलंदी को प्राप्त कर चुकी है।
शिक्षा के द्वारा जीवन के नये आयाम को पाया है,
सफलता प्राप्त करके शिक्षा का महत्व समझाया है।
इसलिए महत्वपूर्ण है बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ योजना,
जिसके विषय में हम सबको मिलकर है सोचना।

कविता

- श्रेया पाण्डेय
बी.ए. प्रथम वर्ष

निर्वस्त्र खड़ी सभा में हूँ,
है नेत्र क्यों ये झुके हुए
है खेल सारा माया का,
तो क्यों है सब स्तंभ खड़े
पुकारती रही सभा गण को,
हैं गूंगे बहरे सब हुए
धर्म के अनुयायी जब,
क्यों है अब मौन खड़े
हैं केश ये बिखर गये,
हैं श्रृंगार अब छूट गये
सभा गण की बात छोड़ो,
क्यों हैं पांडव चुप खड़े
ये शतरंज का जाल ना मेरा था,
ना इसमें मेरा कोई दोष
हूँ फिर भी सबके मध्य खड़ी,
कोई बताएगा क्यों हूँ मैं दाव लगी?
हूँ युवराज की पत्नी मैं,
यही हैं क्या गलती मेरी
लगा दी गई हूँ दाव पर,
क्या पूछा एक बार भी?
यें कैसा अधिकार पांडव आपका मुझ पर?
प्रतिबोध की इस अग्नि में जलूँ क्यों
मैं ही बार-बार,
हे माधव, तुम कहो;
स्त्री हूँ यहीं हैं क्या गलती मेरी?

दुनिया में अनमोल माँ

- उर्मिला गुप्ता
बी.ए. प्रथम वर्ष

प्यारी जग में न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ,
माँ चलना हमें सिखाती,
माँ मंजिल हमें दिखाती,
माँ सबसे मीठा बोल है,
माँ दुनिया में अनमोल है,
माँ खाना हमें सिखाती है,
माँ लोरी गाकर सुलाती है,
माँ प्यारी जग से न्यारी,
कब पैरों पर खड़ा हुआ
तेरी ममता की छाँव में
जाने कब बड़ा हुआ
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
प्यार भी तेरा कैसा है,
प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ।

आभार

- कु. अर्चना श्रीवास्तव
बी.ए. तृतीय वर्ष

सर्वप्रथम हम अपने गुरुजनों के आभारी हैं जिनकी प्रेरणा एवं सहयोग से हम सभी छात्र एवं छात्राओं ने सकुशल यात्रा पूर्ण की।

मैं अपने विभाग के प्रवक्ता का विशेष रूप से, जिन्होंने हम लोगों के साथ रहकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा हम लोग **डॉ. महेन्द्र गिरि** एवं **डॉ. सरोज शाही** के आभारी हैं। जिन्होंने हम लोगों के साथ रहकर मार्ग की सभी कठिनाइयों को दूर किया। इन गुरुजनों में विभिन्न प्रतिभायें हैं, इन्हें कौन सी उपमा दी जाय कहना अत्यन्त ही कठिन है। और अन्त में, मैं उन सभी ज्ञात एवं अज्ञात लोगों का आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से हमारी यात्रा (भ्रमण यात्रा) सफल रही।

तुलसीपुर (देवी पाटन)

तुलसीपुर को ही देवी पाटन के नाम से जाना जाता है। यह मन्दिर बहुत ही प्राचीन काल का मन्दिर है और यह माना गया है कि नौ दुर्गे में से एक दुर्गा जी का निवास स्थान यहीं है। क्योंकि लोगों की मान्यता है कि यहाँ पर देवी जी का दुपट्टा गिरा था और तभी यहाँ पर माँ दुर्गा के मन्दिर का निर्माण हुआ और यही देवी पाटन के नाम से विख्यात हुआ। इस मन्दिर में पूजा-अर्चना करने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं और देवी माँ उन सभी की मनोकामना को पूर्ण करती हैं। यह मन्दिर तुलसीपुर में कुछ ही दूरी पर स्थित है। इसलिए तुलसीपुर का देवी पाटन मन्दिर अत्यधिक प्रचलित स्थान है। अतः यह मन्दिर प्रसिद्ध मन्दिर है।

आत्म विजय

- राहुल यादव
बी.एस.सी. द्वितीय

मैं उस दिन बदल गया, मैं ही मुझ से लड़ गया।
सामने था मैं खड़ा, फिर भी खुद ही से डर गया।
जगाया फिर से साहस और युद्ध को मैं अड़ गया।
समझ के अपना सबसे बड़ा शत्रु, अपने आप से
मैं भिड़ गया।
खून की प्रवाह रूपी बिजलियाँ, शरीर में उफनने लगी
अनवरत छल्ली मेरे देह को करने लगी।
हृदय विचलित होने लगा वक्त के चाप से।
क्योंकि ये युद्ध था मेरा अपने आप से।
आँख, हाथ, सास रूपी शत्रु की सेना बनी
साहस रूपी अस्त्र मेरा अकेला इनसे लड़ गया।
क्षण भर में ही एहसास हुआ दुर्गम बड़ा खुद पर
विजय है।
पा गया जो इसका मन्त्र दुनिया में वही अजय है।
हल सभी सवालों का खुद के मस्तिष्क में पड़ा है,
प्रवेश रोकने द्वार पर इसके खुद का ही बिंब खड़ा है।
कत्ल खुद से खुद का करना असम्भव बड़ा है,
सफल दुनिया में वही है, जो खुद ही से लड़ा है,
काटने पहाड़ को अकेले दशरथ माझी खड़ा है,
जैसे लड़ने गज से चीटी कोई खड़ा है।
काट देती है, शिला को रस्सी अनवरत प्रयास से
डर रहा हूँ, मैं लड़ने को खुद अपने आप से?
विचारने के बाद इतना ऊर्जा का नया संचार था,
सामने मेरे जैसे चूहा बना संसार था।
निकल पड़ा खुद से मैं लड़ने साहस रूपी अस्त्र
लेकर अकेला,
मानो देखने विजय को मेरे उमड़ा हुआ था मेला।

देश हमें देता है सब कुछ

- रोली गुप्ता
बी.ए. तृतीय

देश हमें देता है सब कुछ,
हम भी तो कुछ देना सीखें।
सूरज हमें रोशनी देता,
हवा नया जीवन देता है।
भूख मिटाने को हम सबकी,
धरती पर होती खेती है।
औरों का भी हित हो जिसमें,
हम ऐसा कुछ करना सीखें।
देश हमें देता है...............
पथिक को तपती दोपहर में,
पेड़ सदा देता है छाया।
सुमन सुगन्ध सदा देते हैं,
हम सबको फूलों की माला।
त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम परहित कुछ करना सीखें।
देश हमें देता है ....
जो अनपढ़ है उन्हें पढ़ाये,
जो चुप है उनको वाणी दें।
पिछड़ गये जो उन्हें बढ़ाये,
प्यासी धरती को पानी दें।
हम मेहनत के दीप जलाकर,
नया उजाला करना सीखें।
देश हमें देता है.............

तेरी गोदी में जो सुख माँ

- रोली गुप्ता
बी.ए. तृतीय

तेरी गोदी में जो सुख माँ, सारे जग में कहीं नहीं।
आकर्षित कर सकते हमको, ये चाँद सितारे कहीं नहीं।।
तेरी सेवा में रत होकर, काँटों का पथ भी प्यारा।
कस्तूरी बन बसो हृदय में, रखो ज्ञान उजियारा।।
झूठे जग की मृग तृष्णा में, बुद्धि बिसारे कहीं नहीं।
तेरे पथ की धूल तप्त भी, अमृत घट सी शीतल हैं।।
सागर के लहरों की छाती, ध्येय मार्ग का सम्बल है।
तेरा क्षितिज असीम निरंतर, लगे किनारे कहीं नहीं।।
अपने में विश्वास रखे माँ, अविचल श्रद्धा का वर दो।
प्रभु का पायें अभय हस्त हम, शील-शौर्य सिंचित कर दो।
तेरे सुत तेरे अनुचर माँ, हाथ पसारे कहीं नहीं।
अजेय बल दो, युक्ति बुद्धि दो दूरदर्शिता का शुभ दर्शन।।
कौशल दो व्यवहार - मार्ग में, धर्म-शौर्य-उत्साह चिरंतन।
वैभव की चोटी तक निष्ठा, पथ में हारे कहीं नहीं।

कैम्प के यादें

- द्रिव्या मद्धेशिया
बी.ए. प्रथम

आओ यारो अब करते हैं।
कैम्प शैम्प की बातें।।
याद नहीं आती क्या तुमको।
वह दिन और वह रातें।।
कैसे ड्रिल किया करते थे।
कैसे खाते थे खाना।।
याद नहीं आता क्या तुमको।
संग - संग रोज नहाना।।
सी.ओ. साहब की वाणी।
भूल सकेगा कौन।।
और कैडेट ध्यान से सुनते।
सब हो जाते मौन।।
जिस कैडेट की बी.एच.एम. ने।
कैम्प के बाहर पकड़ा।।
उस कैडेट को लगेगा पक्का।
सारे दिन का रगड़ा।।

बेटियाँ

- प्रियंका गौड़
बी.ए. प्रथम वर्ष

एक बेटी ने अपने पिता से एक प्यारा सा सवाल किया कि पापा ये आंगन में जो पेड़ है, उसे पीछे वाले बगीचे में लगा दें तो? पिता असमंजस में और बोलें बेटी ये चार साल पुराना पेड़ है नई जगह, नई मिट्टी में ढल पाना मुश्किल होगा। तब बेटी ने अश्रुभरी आँखों से पिता से सवाल किया कि एक पौधा और भी तो है आपके आंगन का जो बाईस बरस पुराना है क्या वो नई जगह पर ढल पाएगा?

पिता ने बेटी की बात पर सोचते हुए कहा कि यह शक्ति पूरी कायनात में सिर्फ नारी के पास ही जो कल्प वृक्ष से कम नहीं है।

खुद नए माहौल में ढलकर, औरों की सेवा करती है
पूरी उम्र उनके लिए जीती है, बेटी से बड़ा धन कुछ भी नहीं।

मुझको सरहद पर जाना है

- द्विव्या मद्धेशिया
बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ तुमसे मिलने आयी थी।
मैं कुछ पल साथ निभाने को।
कुछ खुशियाँ देकर जाने को।
कुछ खुशियाँ लेकर जाने को।

दुश्मन ने धावा बोला है।
माँ उसको धूल चटाना है।
अब तुम मुझको मत रोको।
मुझको सरहद पर जाना है।

याद बहुत आता है पापा।
कन्धों पर जो आप घुमाते थे।
कभी मम्मी थप्पड़ लगाती थी।
चाकलेट से हमें मनाती थी।

बहुत दिखाए गाँधी हमने।
भगत सिंह अब दिखाना है।
पापा अब मुझको मत रोको
मुझको सरहद पर जाना है।

क्या पापा आप नहीं जानते।
दुश्मन ने हमें ललकारा है।
''उड़ी हमला की बात रही।
सत्तरह वीरों को मारा है''।

जीवन की भेंट चढ़ा देंगे

- श्वेता
बी.ए. द्वितीय वर्ष

जीवन की भेंट चढ़ा देंगे,
माता का मान बढ़ा देंगे।
खा अन्न और जल तेरा माँ,
यह अंग सकल है बढ़े हुए।
तेरी ही आयु से माता,
यह खास है अब तक बढ़े हुए।
ऋण तेरा है मुझ पर भारी,
उसको हम आज चुका देंगे।
जीवन की भेंट.........

उन वीरों की सन्तानें हम,
आरों से जिनके शीश कटे।
जिनको दोनों नन्हें बच्चे,
थे दीवारों में चुने गये।
गुरु गोविन्द के बच्चों की तरह,
हम अपना शीश कटा देंगे।
जीवन की भेंट........

वह मुकुट जो तेरा प्यारा माँ,
राणा ने जिसको दिए नहीं।
सर्वस्य भी अपना लुटा दिया,
पर मस्तक नीचा किया नहीं।
हम भी सन्तान उन्हीं की हैं,
वह मुकुट तुझे पहना देंगे।
जीवन की भेंट.........

बलिदान हुए जो तुझ पर माँ,
वह पूजा उनकी पूरी हो।

दीपावली पर क्यों न आए पापा अबकी बार

- शालिनी चौधरी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

एक बेटा जिसके पिता शहीद हो जाते हैं, वो बेटा नहीं जानता है कि उसके पिता शहीद हो गए हैं और अपनी माँ से बहुत से सवाल पूछता है तो मैं उन सवालों को पंक्तियों में आपके समक्ष प्रस्तुत करती हूँ-

1.

चारों तरफ उजाला पर अंधेरी रात थी--2,
जब वो हुआ शहीद उन दिनों की बात थी-
आँगन में बैठा बेटा माँ से पूछे बार-बार
दीपावली पे क्यों न आए पापा अबकी बार--2

वह बेटा अपनी माँ को दो-तीन दिनों से चुपचाप, स्तब्ध और जहाँ के तहाँ पड़ी हुई देखता है तो वह अपनी माँ से पूछता है-

2.

माँ क्यूँ न तूने आज भी बिंदिया लगाई है
है दोनों हाथ खाली न मेंहदी रचाई है
बिछिया भी नहीं पाँव में बिखरे से बाल हैं
लगती थी कितनी प्यारी अब ये कैसा हाल है
कुमकुम के बिना सूना सा लगता है माँ श्रृंगार
दीपावली पर क्यूँ न आये पापा अबकी बार--2

बेटा थोड़ी देर के लिए बाहर बच्चों के साथ खेलने जाता है और उन बच्चों को अपने पिताओं से मिले उपहार के बारे में प्रशंसा को सुनकर वह बेटा फिर से अपनी माँ के पास आता है और अपनी माँ से कहता है-

3.

किसी के पापा उसको नए कपड़े लाए हैं--2
मिठाइयाँ और साथ में पटाखे लाए हैं
वो भी तो नए जूते पहन खेलने आया--2
पापा-पापा कहके सबने मुझको चिढ़ाया
अब तो बता दो क्यूँ है सूना आँगन घर-द्वार
दीपावली पे क्यूँ न आए पापा अबकी बार--2

वह बेटा अपनी माँ से लगातार सवाल-पे-सवाल पूछता है और अपनी माँ से कोई उत्तर नहीं मिलता तो वह अपनी माँ को देखता है तभी उसके पिता की लाश आ जाती है उसके आँगन में तो वह बेटा पुनः अपनी माँ से कहता है-

4.

मत हो उदास माँ मुझे जवाब मिल गया
मकसद मिला है जीने का ख्वाब मिल गया--2
पापा का जो काम रह गया है अधूरा
लड़ करके देश के लिए करूँगा मैं पूरा--2
आशीर्वाद दो माँ काम पूरा हो इस बार
दीपावली पे क्यूँ न आए पापा अबकी बार--2

जय-हिन्द, जय-भारत

पिता

- शालिनी चतुर्वेदी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

पिता खुद को ऐसे दिखाता है जैसे किसी चीज की जरूरत नहीं लेकिन हमारी तकदीर सँवारने के लिए तो अपने हाथों की लकीरें धो लेंगे।

हम जब बचपन में होते हैं और हमें कुछ समझ में नहीं आता, हम कई लोगों से पूछते हैं लेकिन कोई नहीं समझा पाता लेकिन केवल एक पिता ही होते हैं जो हमें हर बात समझा सकते हैं, हर बात समझाने वाले भगवान होते हैं पिता, बहुत बुद्धिमान होते हैं पिता, बहुत बुद्धिमान होते हैं पिता, बहुत बुद्धिमान होते हैं।

जो भी चीज हम माँगते हैं, जीवन में, जो भी ख्वाहिश करते हैं जो भी ख्वाहिश करते हैं जो भी डिमांड करते हैं पिता से, वो हर चीज दिलाने वाले इंसान होते हैं पिता, बहुत धनवान होते हैं पिता, बहुत धनवान होते हैं पिता।

हमारे ऊपर आने वाली तमाम मुसीबतों से लड़ने वाले इंसान होते हैं पिता, बहुत बलवान होते हैं पिता, शक्तिमान होते हैं पिता।

पिता अपने पसीने बेचकर तुम्हारे लिए हर खुशी नमाजेंगे, खुद की जिंदगी बेरंग कर के तुम्हारे लिए हर रंग खोलेंगे, पिता हैं, वो कभी कुछ नहीं बोलेंगे, इतने महान होते हैं पिता, बहुत धनवान होते हैं पिता।

उपरोक्त पंक्तियों में मैंने पिता की व्याख्या करने का प्रयास किया है। पिता बहुत महान होते हैं, बहुत बुद्धिमान होते हैं, बहुत धनवान होते हैं।

सम्पादक मण्डल

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सिंह
मुख्य संपादक

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह
सह-संपादक

कैप्टन मुकेश कुमार
सह-संपादक

डॉ. राम किशोर सिंह
सह-संपादक

26 जनवरी ध्वजारोहण

शतरंज कार्यक्रम में A.S.P.

5 सितम्बर को शिक्षक दिवस सम्मान समारोह में कुलपति

हरि बहादुर श्रीवास्तव, तत्कालिक कैबिनेट मंत्री राजा जय प्रताप सिंह

शंतरज प्रतियोगिता में मंचासीन अतिथिगण

गणतंत्र दिवस पर प्राचार्य उद्बोधन

शतरंज कार्यक्रम का उद्‌घाटन कार्यक्रम

मोबाईल, टेबलेट विवरण में विधायक विनय वर्मा का उद्‌बोधन एवं प्राचार्य का उद्‌बोधन

मोबाइल प्राप्त करती महाविद्यालय की छात्रा

महाविद्यालय परिसर में आर.ओ. प्लान्ट का उद्‌घाटन

महाविद्यालय कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगण

आर.ओ. प्लान्ट का उद्‌घाटन कार्यक्रम

एन.सी.सी. के कैडेट

मतदाता दिवस पर मुख्य विकास अधिकारी

महाविद्यालय कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगण

एन.सी.सी.

तिरंगा यात्रा

तिरंगा यात्रा में उपस्थित अतिथिगण

शतरंज प्रतियोगिता के वियजी प्रतिभागी

महाविद्यालय परिवार

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में महाविद्यालय परिसर में पौधारोपण

N.S.S. के स्वयंसेवकों द्वारा वृक्षारोपण

प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय में वृक्षारोपण

स्वच्छ भारत अभियान में महाविद्यालय की N.S.S. की छात्र/छात्रा

N.S.S. का जागरूकता कार्यक्रम

महाविद्यालय परिसर शिक्षणेत्तर कार्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण

महाविद्यालय परिवार एवं अतिथिगण

शिक्षक सम्मान समारोह में प्राचार्य को सम्मानित करते मुख्य अतिथि

आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम में छात्र/छात्राओं द्वारा पौधारोपण

छात्र/छात्राओं को प्राचार्य द्वारा उद्बोधन

मोबाइल प्राप्त करती छात्र/छात्रायें

मोबाइल प्राप्त करती छात्रा

मतदाता शपथ कार्यक्रम

रक्तदान की हुई छात्रा को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए प्राचार्य

तिरंगा यात्रा में स्थानीय विधायक

तिरंगा यात्रा में महाविद्यालय की छात्र/छात्रायें

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम में RHEO

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर NSS एवं NCC के छात्र/छात्रा

NSS के छात्र/छात्राओं द्वारा सफाई कार्यक्रम

योग दिवस में प्रतिभाग करती छात्र/छात्रा

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

तिरंगा यात्रा में शिक्षक/शिक्षणेत्तर कर्मचारी

तिरंगा यात्रा

तिरंगा यात्रा

स्काउट गाइड कार्यक्रम

जागरूकता कार्यक्रम

स्काउट गाइड के विशेष शिविर में प्राचार्य के साथ मुख्य अतिथि

जागरूकता कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्र/छात्रा

योग दिवस पर प्राचार्य एवं प्रशिक्षक द्वारा योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

महा. के शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं छात्र/छात्राओं द्वारा योग किया गया

उ.प्र. सरकार द्वारा आयोजित महा. में सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभाग करते लोक गायक

महाविद्यालय में आयोजित रन फार यूनिटी कार्यक्रम

मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

सड़क सुरक्षा अभियान में जनपद स्तर कार्यक्रम में महा. की छात्रा ने प्रथम स्थान एवं पुरस्कार प्राप्त किया ।

रक्तदान प्रमाण पत्र प्राप्त करते महा. के छात्र

मतदाता शपथ पर आयोजित कार्यक्रम में CEO द्वारा प्रमाण-पत्र वितरण

महाविद्यालय में आयोजित प्री-परीक्षा

शतरंज कार्यक्रम में छात्र/छात्रा

N.S.S. का सफाई कार्यक्रम

रक्तदान कार्यक्रम में महा. के छात्र/छात्र

भूगोल प्रयोगशाला का निरक्षण मण्डल द्वारा निरीक्षण

पुस्तकालय का निरीखण

शतरंज प्रतिभागी

महा. गेट एवं परिसर में भूगोल सम्बद्धता का निरीक्षण मण्डल

महाविद्यालय परिसर में छात्र/छात्राओं हेतु विशेष शिविर लगाकर कोविड बचाव हेतु वैक्सीनेसन किया गया ।

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत जनपद स्तर के कार्यक्रम में क्षेत्रीय उच्च शिक्षाधिकारी के साथ प्राचार्य

शासन के महत्वाकांक्षी योजना टैबलेट वितरण में सांसद महोदय के साथ प्राचार्य

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम एवं पौधरोपण

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत जनपद स्तर सांस्कृतिक कार्यक्रम

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत कार्यक्रम

भौगोलिक शैक्षणिक नैनीताल यात्रा

भौगोलिक शैक्षणिक नैनीताल यात्रा

भौगोलिक शैक्षणिक नैनीताल यात्रा

भौगोलिक शैक्षणिक नैनीताल यात्रा

भौगोलिक शैक्षणिक नैनीताल यात्रा

भौगोलिक शैक्षणिक नैनीताल यात्रा

भौगोलिक शैक्षणिक नैनीताल यात्रा

स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत तिरंगा यात्रा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

विद्यार्थियों ने रैली निकाल लोगों को मतदान के लिए किया प्रेरित

शोहरतगढ़ शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय के एनएसएस के छात्र-छात्राओं द्वारा निकाली गई मतदाता जागरूकता रैली • जागरण

जागरण संवाददाता, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर: शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र-छात्राओं ने सोमवार को मतदाता जागरूकता रैली निकाली। प्राचार्य डा. अरविंद कुमार सिंह ने झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया।

एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी डा. महेंद्र गिरि व अरविंद सिंह के नेतृत्व में जागरूकता रैली महाविद्यालय से निकलकर गड़ाकुल तिराहा, रामजानकी मंदिर, पुलिस पिकेट, भारत माता चौक, बुधई स्मारक सहित आदि जगहों का भ्रमण कर लोगों को मतदान करने के लिए जागरूक किया। रैली के पूर्व छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए प्रधानाचार्य डा. अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि लोकतंत्र एक-एक वोट का महत्व है। मतदान से देश का भविष्य तय होता है। सभी छात्र-छात्राएं अपने घर और आस पास के लोगों को मतदान के लिए प्रेरित करें। इससे मतदान प्रतिशत बढ़ेगा। अरविंद सिंह ने कहा कि मतदान का प्रतिशत बढ़ाने में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसके लिए बिना लालच व भय के मतदान के लिए परिवार के लोगों को बूथ तक पहुंचाएं। इस दौरान डा. धर्मेन्द्र सिंह, डा. सुशील कुमार, डा. राम किशोर सिंह, डा. ज्योति सिंह, डा. जयनारायण त्रिपाठी, रत्नेश सोनी, पंकज सिंह, राजीव, रवि वर्मा, अश्वनी सिंह, प्रतीक मिश्रा, राजेश मिश्रा आदि रहे।

टैबलेट व स्मार्ट फोन वितरण का हुआ प्रसारण

शोहरतगढ़। लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की महत्वाकांक्षी योजना के तहत टैबलेट, स्मार्ट फोन वितरण का सीधा प्रसारण शनिवार को शिवपति महाविद्यालय के विद्यार्थियों को दिखाया गया।

कार्यक्रम में एसडीएम संत कुमार ने बताया कि सभी स्मार्टफोन और टैबलेट में डीजी शक्ति अध्ययन एप इंस्टाल है। एप के जरिए संबंधित विश्वविद्यालय या विभाग विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराएंगे। शासन की ओर से वाल पेपर के माध्यम से रोजगार परक योजनाओं की भी जानकारी दी जाएगी। प्राचार्य अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि एप के जरिए विद्यार्थियों को काफी सहूलियत मिलेगी। इस दौरान ईओ अनिल [illegible]

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने वाली छात्रा सम्मानित

संवाद न्यूज एजेंसी

शोहरतगढ़। परिवहन विभाग के अधिकारियों ने सड़क सुरक्षा अभियान नवंबर माह 2021 में महाविद्यालयों में आयोजित प्रतियोगिता मे श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को बृहस्पतिवार को पुलिस लाइंस में सम्मानित किया।

शिवपति स्नातकोत्तर [illegible] रोली गुप्ता को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर आरटीओ. अधिकारी आशुतोष शुक्ल ने बृहस्पतिवार को प्रमाणपत्र व पांच हजार नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

इस मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुमार सिंह एवं डॉ. धर्मेंद्र सिंह, डॉ. राम किशोर सिंह, मुकेश कुमार, अश्वनी कुमार सिंह, राजीव वर्मा सहित कई लोग [illegible]

जिले व महाविद्यालय के प्रथम प्रोफेसर बने प्राचार्य डा. अरविन्द कुमार सिंह

शोहरतगढ़(एसएनबी)। शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डा. अरविन्द कुमार सिंह ने जनपद व महाविद्यालय के प्रथम प्रोफेसर की उपलब्धि हासिल की है जिससे पूरा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस कर रहा है। शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय के लिए आज 8 जुलाई का दिन खुशी की सौगात लेकर आया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डा अरविंद कुमार सिंह को जिला एवं महाविद्यालय के प्रथम प्रोफेसर होने का गौरव प्राप्त हुआ। यह पदनाम उनकी अकादमिक उपलब्धि तथा शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर स्क्रीनिंग कमेटी की संस्तुति के आधार पर निदेशक उच्च शिक्षा प्रयागराज के द्वारा प्राप्त हुई है। महाविद्यालय के प्रोफेसर ड धर्मेन्द्र सिंह ने कहा कि प्राचार्य डा अरविन्द कुमार सिंह ने जिले व महाविद्यालय में प्रथम प्रोफेसर की उपलब्धि हासिल कर महाविद्यालय का मान बढ़ाया है। इससे पूरा महाविद्यालय परिवार में खुशी की लहर है। महाविद्यालय के अनिल प्रताप चंद, ड रामकिशोर सिंह, अश्विनी कुमार सिंह,पंकज कुमार सिंह, प्रिय[illegible] अर[illegible]

शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय
शोहरतगढ़- सिद्धार्थनगर

"हर घर तिरंगा" आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत शुरू किया गया एक अभियान है।

झंडा किसी भी देश के गौरव और सम्मान को प्रकट करता है। इसका बहुत महत्व होता है। भारत का तिरंगा झंडा जिसे हर भारतीय नागरिक प्यार करता है और सम्मान करता है। ध्वज में तीन रंगों का अलग-अलग महत्व होता है। यह हर भारतीय को गौरवान्वित महसूस कराता है। ध्वज के प्रति प्रेम और सम्मान को पूरे देश में फैलाने के लिए "हर घर तिरंगा" नाम से एक विशेष अभियान शुरू किया गया है। आइए इस अभियान का हिस्सा बनते हैं।

डॉ अरविन्द कुमार सिंह
प्राचार्य

विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन, किया जागरूक

शोहरतगढ़ के शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते जिला सचिव विधिक सेवा प्राधिकरण चंद्र मणि • जागरण

संवाद सूत्र, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर: शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सोमवार को अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। महिलाओं के सशक्तीकरण, अधिकार, कर्तव्य, शिक्षा का अधिकार, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के बारे में जागरूक किया गया।

मुख्य अतिथि जिला सचिव विधिक सेवा प्राधिकरण चन्द्र मणि ने कहा कि आज लड़कियां हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। परंतु वह अनेक कुरीतियों का आज भी शिकार हैं। पढ़े लिखे लोग और जागरूक समाज भी इस समस्या से अछूता नहीं है। कुरीतियों से समाज को निकलना होगा। तहसीलदार धर्मवीर भारती ने कहा कि सरकार नारी सशक्तीकरण में विभिन्न प्रकार की योजना चलाकर जागरूक कर रही है। कार्यक्रम को प्राचार्य डा. अरविंद कुमार सिंह, एके सिंह, एसआई रविकांत मणि त्रिपाठी ने संबोधित किया। इस दौरान आरके सिंह, ज्योति सिंह, डाक्टर धर्मेन्द्र सिंह, अनुपम त्रिपाठी, अखिलेश शर्मा, प्रतीक मिश्रा आदि मौजूद रहे।

6/10/22

शतरंज प्रतियोगिता में उस्मान प्रथम

शतरंज खेलते खिलाड़ी। संवाद

शोहरतगढ़। जिले में शतरंज को बढ़ावा देने और युवाओं को इस खेल के प्रति जागरूक करने के लिए शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अंतर महाविद्यालय शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता के सीनियर और जूनियर वर्ग में कुल आठ खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। प्राचार्य डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि शतरंज को लोकप्रिय बनाने के लिए यह पहल की गई है। प्रति वर्ष महाविद्यालय में शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। प्रतियोगिता में मोहमद उस्मान ने चार अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि उमामणि शुक्ला तीन अंकों के साथ द्वितीय और विवेक कुमार यादव तृतीय स्थान पर रहे। प्रतियोगिता के आयोजन में पूर्व प्राचार्य भारत भूषण द्विवेदी, राजकुमार यादव व डॉ. धर्मेंद्र की भूमिका रही। संवाद

विधिक सशक्तीकरण सेमिनार

शोहरतगढ़ के एसपीपीजी कॉलेज के सभागार में महिलाओं के विधिक सशक्तीकरण सेमिनार को संबोधित करते मुख्य वक्ता रतन कुमार श्रीवास्तव। संवाद

स्वयं करें मतदान, दूसरों को भी करें प्रेरित

मुख्य विकास अधिकारी ने विद्यार्थियों को दी स्वरोजगार से जुड़ने की प्रेरणा

शिवपति महाविद्यालय में शपथ लेते विद्यार्थी व शिक्षक। शिवपति महाविद्यालय में मतदान के लिए शपथ दिलाते मुख्य विकास अधिकारी पुलकित गर्ग। • जागरण

चुनाव की तैयारी

जागरूकता

- शिवपति महाविद्यालय में आयोजित हुआ कार्यक्रम
- मतदान करने के लिए विद्यार्थियों ने ली शपथ

जागरण संवाददाता, शोहरतगढ़: मुख्य विकास अधिकारी पुलकित गर्ग ने [illegible]

मजबूत लोकतंत्र के लिए मतदान की अपील

[illegible]

चुनाव आयोग से होगी शिकायत: [illegible]

सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल करें बेटियां

शोहरतगढ़ स्थित शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बोले क्षेत्राधिकारी हरिश्चंद्र

कार्यक्रम को संबोधित करते सीओ हरिश्चंद्र। इस मौके पर उपस्थित छात्राएं। संवाद

अमर उजाला की ओर से आयोजित कार्यक्रम में कानूनी जानकारी मिली। सीओ के अलावा महिला सिपाहियों ने भी बेहतर जानकारी दी।
- जाह्नवी त्रिपाठी

कानून के दम पर ही छात्राएं शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़कर आसमान में उड़ान भर रही हैं। पुलिस की पाठशाला में बहुत कुछ नया सीखने को मिला।
- अनुष्का दीक्षित

पुलिस की पाठशाला से मुझे कानून का ज्ञान प्राप्त हुआ है। कानून की जानकारी में वे दूसरों की भी मदद कर सकती हैं। हेल्पलाइन नंबर का बेहतर इस्तेमाल करेंगी।
- रोशनी मौर्य

हेल्पलाइन नंबर पर कैसे शिकायत दर्ज कराएं, इस बारे में बताया गया। अब पुलिस से बात करने से डर नहीं लगेगा। पुलिस से सीधा संवाद करने का अवसर मिला।
- रजनी उपाध्याय

इस तरह के आयोजित होने वाले कार्यक्रम से नई सीख मिलती है। यह सराहनीय पहल है। आगे भी ऐसे कार्यक्रम होने चाहिए, ताकि छात्राएं जागरूक हों।
- ज्योत्सना पांडेय

...सिंह, सूर्य नारायण त्रिपाठी, ... सिंह, छात्रा अंजली चौधरी, अनुष्का मिश्रा, रागिनी त्रिपाठी, अंशिका, ममता शर्मा, खुशबू मिश्रा...

24.2.22

निबंध व रंगोली प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागी सम्मानित

शोहरतगढ़ | हिन्दुस्तान संवाद

कार्यक्रम
- शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में छात्रों को सीडीओ ने दी जानकारी
- विद्यार्थियों को मतदान का महत्व समझाया, सभी ने मतदान करने की शपथ ली

...को मजबूत लोकतंत्र में अपना योगदान दें। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि आपकी एक एक वोट देश की दशा व दिशा बदलती है। बेहतर शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य, रोजगार आदि सब आपके वोट से ही संभव होता है। प्राचार्य डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने विद्यार्थियों को एक एक वोट के महत्व को समझाया। कहा कि हर पांच वर्ष में प्रतिनिधि के रूप में प्रधान से लेकर विधायक व सांसद चुनते रहते हैं। सीडीओ ने छात्रा पूजा गुप्ता, रोली गुप्ता, अनुष्का दीक्षित, अंजली, खुश... मिश्रा, प्रिया चौधरी, प्राची उपाध्याय, शालिनी द्विवेदी आदि को रंगोली व निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने... सुशील कुमार ने किया। कैप्टन डॉ. धर्मेंद्र सिंह, डॉ. लक्ष्मीकांत, अभिषेक, मनीष मिश्र, मो. ईशा, जय नारायण...

शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में बुधवार को निबंध व रंगोली प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त छात्रों को सम्मानित करते हुए मुख्य विकास अधिकारी पुलकित गर्ग उपस्थित प्राचार्य डॉ. अरविंद कुमार सिंह। • हिन्दुस्तान

प्राचार्य ने बदल दिया तालाबों का भूगोल

प्रशांत सिंह • सिद्धार्थनगर

डा अरविंद सिंह

जल संरक्षण

शिवपति पीजी कालेज शोहरतगढ़ के प्राचार्य डा. अरविंद कुमार सिंह भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष भी हैं। छात्रों को जल संरक्षण के संबंध में बताते हैं। इन्हें प्रेरित भी करते रहते हैं। भूगर्भ जल संरक्षण की भी जानकारी देने पर विशेष जोर रहता है। खुद प्रेरणास्रोत बनकर शोहरतगढ़ तहसील क्षेत्र के धुसुरी खुर्द गांव के निवासी प्राचार्य ने छह तालाब की खोदवाई है। पिता के समय का बड़ा तालाब जर्जर हो गया, अब उसका जीर्णोद्धार कराया है। दो दशक पूर्व चारों ओर पौधारोपण कराया। यह बड़े वृक्ष में तब्दील हो चुके हैं। ताजी व शुद्ध हवा लेने के लिए ग्रामीण तालाब पर पहुंचते हैं। गांव के कुएं को भी संरक्षित कर रहे हैं।

डा. अरविंद कुमार सिंह कहते हैं धरती के अंदर का पानी एक गुल्लक की तरह से है। जितना हम उसमें डालेंगे, उतना ही निकाल सकते हैं। यदि बारिश का जल संचित नहीं किया तो धरती का जलस्तर घटते-घटते समाप्त हो जाएगा। यह मानव जाति और आर्थिक गतिविधियों के लिए बहुत हानिकारक साबित होगा। बारिश के जल को संचित करना भारत की प्राचीन परंपरा है। इसीलिए पोखरा, बावड़ी तथा कुआं खोदवाना धार्मिक कार्य माना जाता रहा है। जल संरक्षण के लिए जरूरी है कि वह प्रदूषित नहीं हो। उतना ही आवश्यक है कि भूगर्भ के जल का रेन वाटर हार्वेस्टिंग के द्वारा रिचार्ज करना। वर्तमान में यदि छतों के पानी को धरती के अंदर डाला जाए और जगह-जगह पर मेड़बंदी और छोटे-छोटे बांध बनाए। गड्ढे और पोखरा खोदवाने से जल को संचित किया जा सकता है। इसमें मछली पालन भी कर सकते हैं। किसानों को अतिरिक्त आर्थिक लाभ भी मिलेगा।

मत्स्य पुराण में है बाग व तालाब के विवाह का प्रसंग: धार्मिक ग्रंथ मत्स्य पुराण में जल संरक्षण के संबंध में उल्लेख है। तालाब से बाग के विवाह का प्रसंग है। विवाह में मगरमच्छ, मछली, कछुआ आदि जंतुओं का उल्लेख किया गया है। पोखरा व तालाब से जल पृथ्वी के गर्भ में भी जाता है। सतह पर भी संरक्षित रहता है, पशु, पक्षी व मनुष्य को पीने, स्नान व खेती करने के काम में आता है। संचित जल सभी मौसम में उपलब्ध रहता है।

प्रतियोगिता से बच्चों का होता है चहुमुंखी विकास

शिवपति पीजी कालेज के तीन दिवसीय खेल का हुआ समापन, सम्मानित हुए खिलाड़ी

जागरण संवाददाता, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर : सांसद जगदंबिका पाल ने कहा कि विद्यालय में शिक्षा के साथ खेल प्रतियोगिता का आयोजन होना चाहिए। इससे बच्चों का मानसिक व शारीरिक विकास होता है। बगैर लक्ष्य निर्धारण के कोई व्यक्ति सफल नहीं हो सकता। छात्र की जिस क्षेत्र में रुचि हो, उसी में कैरियर बनाए। ईमानदारी से की गई मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती है। सफलता सुनिश्चित है।

यह बातें बुधवार को शिवपति पीजी कालेज में चल रहे तीन दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता के समापन पर कहीं। उन्होंने कहा कि...

155 मंगलदल के सदस्यों में खेल सामग्री वितरित

सिद्धार्थनगर : सांसद जगदंबिका पाल व विधायक कपिलवस्तु श्यामधनी राही ने बुधवार को लोहिया कला भवन में खेल सामग्री वितरित किया। नौगढ़ तहसील के पांच ब्लाक के लोटन, बढ़नी, उसका बाजार, नौगढ़ और जोगिया के 155 मंगल दल के सदस्यों को खेल किट प्रदान किया। सांसद ने कहा कि युवाओं के भीतर अपार ऊर्जा होती है। आवश्यकता है उसे सही दिशा दिखाया जाए। जब युवा कल्याण विभाग मंत्री रहे, तब मैं विवेकानंद युवा अवार्ड दिया जाता रहा। ... कहा कि ग्रामीण क्षेत्र युवाओं को आगे बढ़ने के लिए मंच देने की आवश्यकता है। जिला विकास अधिकारी ... सिंह ने कहा कि खेल व व्यायाम प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

है। धैर्य व लगन से काम करें, कभी...

मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए किया जागरूक

शोहरतगढ़ में एनएसएस के स्वयंसेवकों ने निकाली रैली

शोहरतगढ़। शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम में जुड़े विद्यार्थियों ने मंगलवार को मतदाता जागरूकता रैली निकाली। प्रधानाचार्य डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। बच्चों ने मतदाताओं को बढ़चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की।

एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. महेंद्र गिरी और अरविंद सिंह की देखरेख में जागरूकता रैली महाविद्यालय से निकाली गई। रैली में शामिल लोग, गड़ाकुल तिराहा, रामजानकी मंदिर, पुलिस पिकेट, भारत माता चौक, कुर्द स्मारक सहित आदि कस्बों में पहुंचे और लोगों को मतदान के प्रति जागरूक किया। प्रधानाचार्य अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि लोकतंत्र में एक-एक वोट का महत्व है। सभी छात्र-छात्राएं अपने घर और पड़ोस के लोगों को मतदान के लिए बूथ तक भेजें। इससे 100 फीसदी मतदान का लक्ष्य हासिल करने में आसानी रहेगी। युवा मतदाताओं को भी वोट डालने के लिए प्रेरित करें।

एनएसएस अधिकारी अरविंद सिंह ने कहा कि मत प्रतिशत बढ़ाने में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। ...के लिए ...दौरान डॉ. ...र सिंह, ...व वर्मा, ...श्र आदि

...को किया गया सम्मानित, कुशल शिक्षक होती है मां, नई शिक्षा नीति देगी अच्छा नागरिक

विधायक श्यामधनी राही ने किया शिक्षकों को सम्मानित

मिला टैबलेट तो खुशी से चमक उठे चेहरे

जागरण संवाददाता, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर : शिवपति महाविद्यालय में टैबलेट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि विधायक विनय कुमार वर्मा ने 99 छात्राओं को टैबलेट दिए तो चेहरों की मुस्कान बढ़ गई। विधायक ने टैबलेट सौंपते हुए बोले कि खूब मन लगाकर पढ़ना और समस्याओं को टैबलेट के बल पर जीतना।

कहा कि सरकार की पहल से सबका साथ सबका विकास का सपना साकार हो रहा है। आज के आधुनिक युग में छात्राएं प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहीं है। हम किसी भी चीज को अच्छे के लिए इस्तेमाल करेंगे, तो परिणाम अच्छे होंगे। डिजिटल का जमाना है। सारे काम मोबाइल, टैबलेट और लैपटाप से हो जाते हैं। नोडल अधिकारी प्रचार्य डा. अरविंद कुमार सिंह ने कहा कि कोरोना महामारी के कारण पिछले दो साल से युवाओं की पढ़ाई-लिखाई एजुकेशन शुरु किया। योगी सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए युवाओं को टैबलेट और स्मार्टफोन देने की योजना प्रारम्भ की थी। इसी योजना के तहत छात्र छात्राओं को टैबलेट और स्मार्ट फोन दिया जा रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता ...

रहे है। किसान, छात्र, नौजवान के लिए जन कल्याणकारी योजनाएं चला रहे है। इस दौरान एसडीएम उत्कर्ष श्रीवास्तव, सूर्यप्रकाश पाण्डेय,संदीप मिश्रा,पंकज सिंह, रत्नेश सोनी, अश्वनी सिंह आदि रहे।

शोहरतगढ़ के शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में टैबलेट वितरण के बाद छात्राओं के साथ खड़े विधायक विनय वर्मा, नोडल अधिकारी प्राचार्य डा.अरविंद कुमार सिंह • जागरण

यह और अन्य खबरें देखें

...फहराने के लिए निकाली जागरूकता रैली

शोहरतगढ़ हर्ष में एनएसएस के स्वयंसेवकों ने निकाली हर घर तिरंगा यात्रा • जागरण

तिरंगा का महत्व को बताया : शोहरतगढ़, ...

...देश ने बहुत कुछ पाने की ... की है। राष्ट्र भावना व देश प्रेम ... जज्बा हर नागरिक में बढ़ाने ... बलिदानियों के जीवन से प्रेरणा ... की आवश्यकता है। इतिहास ... समझ कर आजादी के लिए ... संघर्षों को याद किया जाना ... राष्ट्रवाद के लिए हर व्यक्ति ... समर्पित रहना होगा।

डा. रवि कांत शुक्ला, क्षेत्रीय ... अधिकारी डा. कुमुद ... प्राचार्य डा. अभय श्रीवास्तव ने संबोधित किया। जनपद ... दर्जन विद्यालयों से कार्यक्रम ... शामिल लोगों ने अपने अपने ... को रखकर आजादी के ... स्वतंत्रता संग्राम में योगदान ... महान विभूतियों को याद किया ... दौरान डा.सुशील कुमार, डा. ... मिश्रा, डा. शिवेंद्र सिंह, ... कुमार, अरविंद, शंभू मिश्र ... पाल, बलराम चौरसिया, ... मिश्रा,दिलीप कुमार, विजय ... एके सिंह आदि रहे।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना, गंगा,
उच्छल, जलधि तरंग।
तव शुभनाम जागे,
तव शुभ आशिष मांगे।
गाहे तव जय गाथा,
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय, जय, जय, जय हे।

राष्ट्रगीत

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम् ॥1॥
कोटि कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं मातरम ॥2॥
तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वम् हि प्राणारू शरीरे बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गडी मन्दिरे-मन्दिरे ॥3॥
त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलाम् अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलाम् मातरम्
वन्दे मातरम्
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीं भरणीं
मातरम् ॥ 5॥

काला नमक चावल

एक जनपद, एक उत्पाद (सिद्धार्थनगर)

बाणगंगा बैराज

पैलेश शोहरतगढ़

शिवपति पी.जी. कालेज

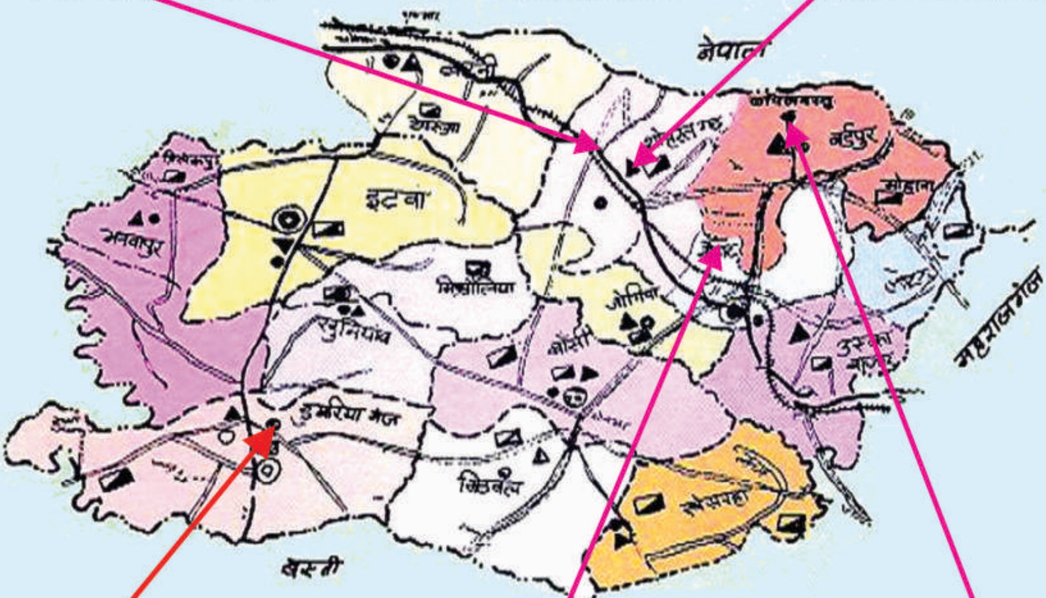

अमरगढ़ शहीद स्थल

जिला मुख्यालय

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

VISION

Higher Education for all Scetor in Tarai Region.

तराई क्षेत्र में सबके लिए उच्च शिक्षा की सुविधा हो।

MISSION

To Develop A Highly Educated. Self Respecting And confidant Youth, Who can be Helpful in Construction of Strong Disciplined and Proud Society.

उच्च शिक्षित, आत्म-सम्मानित एवं आत्म-विश्वासी युवा-शक्ति का विकास जो सबल, अनुशासित और गौरवशाली समाज की रचना में सहायक हो।